राष्ट्रीय हिंदी मासिक समाचार पत्र

बातों बातों में

संपादक पुष्पा रानी

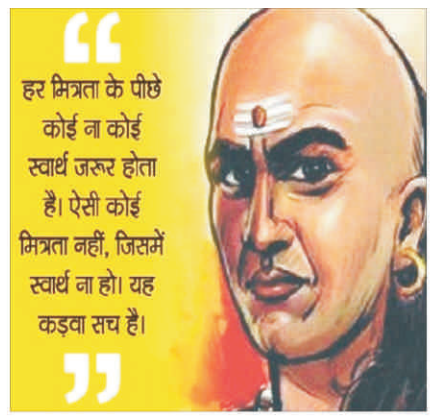

मंगलवार 05 जनवरी 2021 वर्ष: 01 अंक: 02 पृष्ठ: 08 वार्षिक मूल्य: 500/- Title Code : HARHIN11298 Email: batonbatonmeinnews@gmail.com

किसान आंदोलन का 40 वां दिन सातवें दौर की बातचीत बेनतीजा

रणदीप रोड़
कुरुक्षेत्र/ बातों बातों में

किसानों और सरकार के बीच बहुप्रतीक्षित 7वें दौर की बैठक भी बेनतीजा ही खत्म हो गई।

अब 8 जनवरी को फिर से बैठक होगी। सरकार ने आज बैठक में किसानों की मांगों पर विचार करते हुए तीनों कानूनों में संशोधन के लिए संयुक्त कमेटी गठित करने पर तैयारी की बात कही लेकिन किसानों ने सरकार के इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया। आंदोलन के दौरान जान गंवाने वाले किसानों के लिए बैठक में केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, पीयूष गोयल, सोमप्रकाश ने किसान नेताओं के साथ विज्ञान भवन में दो मिनट का मौन रखा। किसानों ने आज मंत्रियों के साथ खाना भी नहीं खाया। किसान नेता अपनी मांगों पर अडिग रहे और तीनों कृषि कानूनों को रद्द करने की बात की गई जबकि सरकार की तरफ से सुधार करने की बात की गई। कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने बार–बार किसानों से अपील की कि आप सुधार पर मान जाइए।

कानून वापसी नहीं तो घर वापसी नहीं: टिकैत

बैठक के बाद भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता राकेश टिकैत ने कहा कि 8 जनवरी को सरकार के साथ फिर से मुलाकात होगी। तीनों कृषि क़ानूनों को वापिस लेने पर और एमएसपी दोनों मुद्दों पर 8 तारीख को फिर से बात होगी।

टिकैत ने कहा कि हमने बता दिया है क़ानून वापसी नहीं तो घर वापसी नहीं। केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि सरकार देशभर के किसानों के प्रति प्रतिबद्ध है। सरकार जो भी निर्णय करेगी, सारे देश को ध्यान में रखकर ही करेगी। उन्होने कहा कि चर्चा का माहौल अच्छा था परन्तु किसान नेताओं के कृषि क़ानूनों की वापसी पर अड़े रहने के कारण कोई रास्ता नहीं बन पाया। अब 8 तारीख को अगली बैठक होगी। मंत्री ने विश्वास जताया कि किसानों का भरोसा सरकार पर है इसलिए अगली बैठक तय हुई है।

कांग्रेसी विधायक देंगे शहीद किसानों को 2-2 लाख

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और हरियाणा विधान सभा में विपक्ष के नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि सभी कांग्रेस विधायकों ने मिलकर ये फैसला लिया है कि कांग्रेस विधायक दल निजी कोष से आंदोलन में शहादत देने वाले किसानों के परिवारों को 2–2 लाख रुपये की आर्थिक मदद करेगा। भविष्य में भी इन परिवारों की हर संभव मदद के प्रयास जारी रहेंगे।

भारत में दुनिया का सबसे बड़ा कोविड टीकाकरण अभियान शुरू होगा: मोदी

रणदीप रोड़
कुरुक्षेत्र/ बातों बातों में

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वैज्ञानिकों एवं तकनीशियनों की प्रशंसा करते हुए कहा कि देश को उन पर गर्व है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'भारत में निर्मित टीकों के लिए मंजूरी मिलने के बाद सोमवार को कहा कि जल्द ही देश में कोरोना वायरस को काबू करने के लिए दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू होने वाला है। कोविशील्ड ओर को वैक्सीन टीकों के सीमित आपात इस्तेमाल को मंजूरी दिए जाने के एक दिन बाद पीएम मोदी ने कहा, श्भारत में दुनिया का सबसे बड़ा कोविड–19 टीकाकरण अभियान शुरू होगा। इसके लिए, देश को अपने वैज्ञानिकों एवं तकनीशियनों के योगदान पर गर्व है। 'प्रधानमंत्री ने कदम बढ़ाने के साथ–साथ राष्ट्रीय माप पद्धति सम्मेलन में हमारे मानक भी ऊंचे होने वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि यह सुनिश्चित करना होगा कि' भारत निर्मित उत्पादों की न केवल वैश्विक मांग हो, बल्कि उनकी वैश्विक स्वीकार्यता भी हो। उन्होंने कहा, 'किसी उत्पाद की गुणवत्ता उसकी मात्रा जितनी ही महत्वपूर्ण है। आत्म निर्भर भारत के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में भारत के औषधि नियामक ने सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया द्वारा निर्मित ऑक्सफोर्ड कोविड–19 टीके 'कोविशील्ड और भारत बायोटेक के स्वदेश में विकसित टीके 'कोवैक्सीन के देश में सीमित आपात इस्तेमाल को रविवार को मंजूरी दे दी, जिससे व्यापक टीका करण अभियान का मार्ग प्रशस्त हो गया है।

राष्ट्रीय युवा नीति का एकमात्र लक्ष्य युवाओं सशक्त बनाना: कटारिया

केन्द्रीय राज्यमंत्री रतनलाल कटारिया ने राज्यस्तरीय युवा संसद में की शिरकत

पुष्पा रानी
कुरुक्षेत्र/बातों बातों में

केंद्रीय जल शक्ति एवं सामाजिक न्याय अधिकारिता राज्य मंत्री रतनलाल कटारिया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राष्ट्रीय युवा नीति का एकमात्र लक्ष्य युवाओं को पूर्ण रूप से क्षमता हासिल कराने, सशक्त बनाने तथा उनके जरिए देश को राष्ट्रों के बीच सही जगह हासिल कराने में समर्थ है।

केंद्रीय मंत्री रतनलाल कटारिया ने सोमवार नेहरू युवा केंद्र संगठन द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय युवा संसद के कार्यक्रम में सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि युवाओं के विकास के लिए क्षेत्रों की पहचान की है जिसमें प्राथमिक क्षेत्र में शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार, उधमिता, स्वास्थ्य एवं स्वस्थ जीवन शैली, खेल, सामाजिक मूल्यों का संवर्द्धन, समुदाय से जोडना, राजनीति एवं

शासन में भागीदारी, युवाओं को संलग्न करना, समावेशी और सामाजिक न्याय में शामिल करना है।

आज देश में 60 करोड़ से ऊपर युवा हैं जो देश की कुल आबादी का 30 प्रतिशत है। नेहरू युवा केंद्र संगठन हरियाणा द्वारा प्रांत के सभी 22 जिलों में जिला युवा संसद कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस प्रतियोगिता में नेहरू युवा केंद्र तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के 4715 प्रतिभागियों ने प्रतिभागी की है।उन्होंने कहा कि जिला स्तर के युवा संसद कार्यक्रम में युवाओं द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उन्नत भारत अभियान, नए परिवेश में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सुदृढीकरण एवं शून्य बजट प्राकृतिक खेती किसानों के लिए वरदान विषयों पर अपने वक्तव्य रखे। हरियाणा युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत 8 उपयोजनाओं को शामिल किया गया है जिनमें से जुड़ कर करोड़ों युवाओं को लाभ होगा।

हरियाणा के 22 जिलों में से चयनित 40 प्रतिभागी प्रतिभागिता कर रहे है। राज्य युवा संसद में युवा प्रतिभागी जलवायु परिवर्तन कोविड़–19 से भी बड़ा खतरा, भारतीय अर्थव्यवस्था का सुदृढीकरण, नारी शक्ति का इष्टतम उपयोग, एक नए भारत के लिए युवाओं में नई ऊर्जा का संचार और भारत में अभिनव स्टार्टअप हेतु इको सिस्टम का विकास विषय पर विचार करेगा।

कुवि में पीएचडी प्रवेश परीक्षा की सभी तैयारियां पूरी

प्रवेश परीक्षा 7 व 9 जनवरी

पुष्पा रानी
कुरुक्षेत्र/बातों बातों में

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पीएचडी प्रवेश परीक्षा की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। लोकसम्पर्क विभाग के उपनिदेशक डॉ. दीपक राय बब्बर ने बताया कि पीएचडी में मुख्य विषयों के लिए 7 जनवरी को प्रवेश परीक्षा आयोजित होगी। उन्होंने बताया कि इसके लिए तीन केन्द्र बनाए गए हैं। डॉ. दीपक राय बब्बर ने बताया कि अलाईड विषयों के लिए पीएचडी प्रवेश परीक्षा 9 जनवरी को आयोजित होगी।

इसके लिए दो केन्द्र बनाए गए है। उन्होंने बताया कि इसके लिए सभी तैयारियां पूरी की जा चुकी हैं। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षा 11.00 बजे से 12.00 बजे तथा 2.00 बजे से 3.00 बजे के बीच आयोजित होगी। पीएचडी प्रवेश परीक्षा सम्बन्धी विस्तृत जानकारी विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध है।

पुलिस द्वारा जब्त किये गए एनडीपीएस एक्ट के तहत नशीले पदार्थों को बाखली पेपर मील पेहवा में किया जायेगा नष्ट: पुलिस अधीक्षक

रणदीप रोड़
कुरुक्षेत्र/ बातों बातों में

नशीली वस्तु अधिनियम के तहत पुलिस विभाग द्वारा जब्त किये गये नशीले पदार्थों को बाखली पेपर मील पेहवा में नष्ट किया जायेगा। पुलिस विभाग द्वारा अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए समय–समय पर नशे के कारोबार करने वाले लोगों पर कार्यवाही करते हुए उनसे नशीले पदार्थ जब्त किये जाते है। सामान्य रुप से नशा तस्करों पर कार्यवाही करते हुए कई बार पुलिस द्बारा विशेष अभियान चला कर नशे के धन्धें में लगे लोगों पर कार्यवाही की जाती है।

नशीली वस्तु अधिनियम के तहत मामले दर्ज करके नशा तस्करों के कब्जे से नशीले पदार्थों को जब्त किया जाता है। जब्त शुद्धा नशीले पदार्थो को एक कानूनी प्रक्रिया के तहत नष्ट किया जाता है, ताकि इस प्रकार के नशीले पदार्थों का कोई दुरुप्रयोग न कर सकें। अंबाला रेंज के अंतर्गत आने वाले तीनों जिलों की पुलिस द्वारा दर्ज किये गये 134 मामलों में जब्त किये गये चूरा पोस्त, स्मैक, चरस, गांजा, हेरोईन, सुल्फा व नशीली दवाईयों को बाखली पेपर मील पेहवा में नष्ट किया जाएगा। यह जानकारी पुलिस अधीक्षक कुरुक्षेत्र, हिमान्शु गर्ग ने दी । इस बारे में जानकारी देते हुए श्री हिमान्शु गर्ग ने बताया कि पुलिस महा निरीक्षक अम्बाला मण्डल अम्बाला के आदेश नुसार जिला कुरुक्षेत्र, यमुनानगर व जिला अम्बाला में नशीली वस्तु अधिनियम के तहत दर्ज करीब 134 मामलों में जब्त किये गये नशीलों पदार्थों को बाखली पेपर मील पेहवा में नष्ट किया जाएगा।

इस प्रकार के नशीले पदार्थो को नष्ट करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश अनुसार एक कानूनी प्रक्रिया के तहत कमेटी का गठन किया जाता है। इन 134 मामलों में जब्त किए गए नशीले पदार्थों को नष्ट करने के लिए पुलिस महानिरीक्षक अम्बाला मण्डल, अम्बाला श्री वाई पूर्ण कुमार की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई है, जिसके मैम्बर पुलिस अधीक्षक, अम्बाला श्री हामीद अख्तर व पुलिस अधीक्षक कुरुक्षेत्र, श्री हिमान्शु गर्ग होंगेंद्य जिनकी अध्यक्षता में दिनांक 6 जनवरी 2021 को सायं 4 बजे बाखली पेपर मील पेहवा में नष्ट किया जाएगा। जिला यमुनानगर, अम्बाला व कुरुक्षेत्र पुलिस द्वारा दर्ज किए गए 134 मामलों में जब्त किये गये नशीले पदार्थ जिसमें चूरा पोस्त–11 किंवटल 533 ग्राम, स्मैक– 147 ग्राम 784 मिलीग्राम, चरस– 300 ग्राम, गांजा– 64 किलोग्राम 270 ग्राम, हेरोईन– 37 ग्राम 782 मिलीग्राम, सुल्फा– 265 ग्राम, भांग– 50 ग्राम व नशीली दवाईयों के 11 मामलों में 89110 नशीली गोलियां , 3175इंजेक्शन तथा 2688 नशे के कैप्सूलों को नष्ट किया जाएगा। हिमान्शु गर्ग ने बताया कि इससे पूर्व फैसलाशुदा तथा विचाराधीन मामलों में जब्त किये गए नशीलें पदार्थों को लकड़ी में आग में जलाया जाता था। जिससे पर्यावरण पर काफी बुरा प्रभाव पड़ता था तथा इस प्रक्रिया में खर्च भी अधिक आता था। पर्यावरण को बचाने के लिए राज्य स्तर पर उच्च अधिकारियों द्वारा विचार–विमर्श करने उपरांत निर्णय लिया गया था कि इस प्रकार के पदार्थों को किसी ऐसी जगह पर नष्ट किया जाये जहाँ पर इसके जलाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव ना पड़े। जिसको साकार करने के लिए पुलिस महा निरीक्षक अम्बाला मण्डल अम्बाला ने उनके अंतर्गत आने वाले जिला कुरुक्षेत्र, अम्बाला व यमुनानगर के करीब 134 मामलों में जब्त किये गये नशीले पदार्थों को बाखली पेपर मील पेहवा में नष्ट किये जाने का निर्णय लिया है। बाखली स्थित पेहवा सैन्सस पेपर मिल में नशीले पदार्थों को फ्यूल के रूप में इस्तेमाल किया जायेगा। नशीले पदार्थों को पेपर मील में प्रयोग होने वाले इंधन के साथ मिलाकर जलाया जाये।

कुरुक्षेत्र में 7 जनवरी से होगा वैक्सीन लगाने का मॉकड्रिल: सुखबीर

कोरोना वैक्सीन टीकाकरण होगा अलग–अलग चरणों में, प्रथम चरण में हेल्थ वर्कर को लगेगी कोरोना वैक्सीन, प्रशासन ने पूरी की तैयारियां, जिले में बनाए 6 सेंटर, 5–5 वैक्सीन अधिकारियों की टीमें करेंगी निर्धारित समय तक कार्य, सभी अधिकारियों को आपसी तालमेल से करना होगा कार्य

पुष्पा रानी
कुरुक्षेत्र/बातों बातों में

जिला सिविल सर्जन डा. सुखबीर सिंह ने कहा कि भारत सरकार से कोरोना वायरस वैक्सीन की मंजूरी मिलने के बाद जिले में वैक्सीन का टीका लगाया जाएगा।प्रथम चरण में कोविड–19 के दौरान कार्य करने वाले हैल्थ वर्करों को कोरोना वैक्सीन का टीकाकरण किया जाएगा, दूसरे चरण में फ्रंट लाईन वर्करों तथा तीसरे चरण में जिनकी आयु 50 वर्ष से उपर है तथा उसके बाद उन व्यक्तियों का टीकाकरण किया जाएगा जो किसी भी बीमारी से ज्यादा ग्रस्त है। वे सोमवार को कृष्ण नगर गामड़ी सीएचसी हेल्थ सेंटर में अधिकारियों की एक बैठक को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि इस अभियान के तहत जिले में 7 जनवरी 2021 को मॉकड्रिल चलाई जाएगी तथा लोगों को कोविड–19 वैक्सीन के बारे में जागरूक किया जाएगा। इसअभियान के तहत जिले में 6 सैंटर बनाएं गए है जिसमें जिला लोक नायक जयप्रकाश अस्पताल, सैक्टर 4 पोली क्लीनिक तथा इसके अलावा पिहोवा, बाबैन, कृष्ण नगर गामडी व मथाना की सीएचसी सैंटर में बनाएं गए है और इन सैंटरों में सुबह 11 बजे से लेकर दोपहर 1 बजे तक कोविड–19 वैक्सीन का टीकाकरण किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इन सैंटरों में आने वाले लोगों को पहले रजिस्ट्रेशन किया जाएगा तथा उसके बाद ही सूचि के आधार पर लोगों को कोविड–19 की वैक्सीन दी जाएगी। उन्होंने ने बताया कि ट्रायल के तौर पर इन सैंटरों में 5 वैक्सीन अधिकारियों की एक टीम गठित की गई है और इसी तरह जिले में बनाएं गए 6 सैंटरों में इस तरह के 5–5 वैक्सीन अधिकारियों की टीम सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक कार्य करेंगे, यह टीम आगे भी इसी तरह से कार्य करेंगी। उन्होंने कहा कि इस टीम में सबसे

पहले सिक्योरिटी पर्सन सैंटर में आने वाले लोगों को सोशल डिस्टेंस के साथ मास्क व हाथों को सेनिटाईज करवाना सुनिश्चित करेगा और यह पर्सन पुलिस विभाग, होम गार्ड या एनसीसी से हो सकता है। इस टीम में वैक्सीन अधिकारी सैंटरों में आने वाले लोगों को सूचि के हिसाब से वैरिफाई करना, आधार कार्ड व फोटो आईडी प्रूफ को चौक करना सुनिश्चित करेगा। इसके बाद वैक्सीन अधिकारी सैंटर के रूम में आने वाले व्यक्तियों को कोविड–19 की वैक्सीन उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करेगा तथा जिस भी व्यक्ति को वैक्सीन दी जाएगी उस व्यक्ति के मोबाईल पर वैकसीन प्राप्त करने का संदेश भी भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि यह वैक्सीन 2 चरणों में दी जाएगी पहले चरण में वैक्सीन देने के बाद वैक्सीन अधिकारी व्यक्ति को एक अलग रूम में ले जाना सुनिश्चित करेगा तथा वैक्सीन प्राप्त कर चुके व्यक्ति को कम से कम 30 मिनट तक उस रूम में रहना होगा और वैक्सीन अधिकारी यह भी सुनिश्चित करेंगे कि उस व्यक्ति के शरीर पर इस वैक्सीन का कोई बुरा प्रभाव तो नहीं पडा है। इसके अलावा दूसरी वैक्सीन लगभग 28 दिनों के बाद ही लगाई जाएगी जिसकी तिथि व्यक्ति को एसएमएस के जरिए बता दी जाएगी। यह वैक्सीन जिले के सभी लोगों को निरूशुल्क प्रदान की जाएगी।

उन्होंने बताया कि आने वाले समय में यह सैंटर स्कूलों, अस्पतालों, नगर पालिका, पंचायत, कम्यूनिटी हॉल, में बनाया जा सकता है। सरकार द्वारा लोगों को जागरूक करने के लिए ई–संजीवनी एप भी लॉच की गई है जिसे को भी व्यक्ति अपने एंड्रोएड मोबाईल में डाउनलोड करके इस एप के जरिए कोविड–19 से बचाव हेतु किसी भी तरह की जानकारी ले सकता है। इस बैठक का संचालन डिप्टी सीएमओ डा. अनुपमा सिंह ने किया। इस मौके पर डा. रमेश सभ्रवाल सहित स्वास्थ्य विभाग के साथ–साथ विभिन्न विभागों के आलाधिकारी मौजूद थे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल पद्धति को किया पुन: स्थापित-आचार्य देवव्रत

रणदीप रोड़
कुरुक्षेत्र/ बातों बातों में

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द स्वतंत्रता सेनानी व महान शिक्षाविद् थे, उन्होंने गुरुकुलों की स्थापना के साथ देश को आजाद कराने में भी अहम भूमिका अदा की। महात्मा गांधी को 'महात्मा' की उपाधि देने वाले भी स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। राज्यपाल आचार्य देवव्रत शनिवार को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर परआयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि मानव जन्म से नहीं बल्कि सुकर्मों से महान बनता है, स्वामी श्रद्धानन्द इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है। स्वामी श्रद्धानन्द ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को नकारते हुए विलुप्त हो चुकी हमारी प्राचीन गुरुकुलीय पद्धति को पुन: स्थापित किया। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल सूपा (गुजरात) सहित सर्वप्रथम जालंधर आर्य पुत्री पाठशाला खोलकर देश में समाज में शिक्षा के प्रसार में महती भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का सत्संग सुना तो उनके जीवन की दिशा बदल गई इससे पता चलता है कि श्रद्धा व विश्वास से सुना गया सत्संग किस प्रकार से नास्तिक को आस्तिक व व्यभिचारी को सदाचारी बना देता है। उन्होंने देश व समाज को जो कुछ दिया वह चिरकाल तक विश्व को मार्गदर्शित करता रहेगा।

किसानों को समर्थन देने गांव थाना स्तिथ टोल प्लाजा पर पहुंचे पूर्वमंत्री व कांग्रेस नेता अशोक अरोड़ा, बोले- सरकार सब्र का इम्तिहान न लें

रणदीप रोड़
कुरुक्षेत्र/ बातों बातों में

पूर्वमंत्री व वरिष्ठ कांग्रेस नेता अशोक अरोड़ा आंदोलनरत किसानों को समर्थन देने के लिए आज पिहोवा के गांव थाना स्थापित टोल प्लाजा पर किसानों के धरना स्थल पर पहुंचे।

इस मौके पर अरोड़ा ने कहा कि ये आंदोलन पूरी तरह शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीके से चल रहा है। उन्होंने जिंदगी में कभी इतना अनुशासित आंदोलन नहीं देखा। इसके लिए वो किसानों के जज़्बे को सलाम करते हैं। वो मांग करते हैं कि सरकार हठधर्मिता छोड़कर किसानों की मांगों को माने। क्यूंकि लोकतंत्र में राजहठ का कोई स्थान नहीं होता। किसानों

को संबोधित करते हुए अशोक अरोड़ा ने कहा कि वो पहले दिन से ही मन, वचन और कर्म से किसानों का समर्थन करते आए हैं। क्योंकि उनकी मांगे पूरी तरह जायज हैं। आज जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा और राजनीति से ऊपर उठकर लोग इस आंदोलन का समर्थन कर रहे हैं। पिहोवा के गांव थाना स्थित टोल प्लाजा पर धरनारत किसानों के बीच पहुंचे पूर्वमंत्री अशोक अरोड़ा ने किसानों के प्रति सरकार के रवैये पर गहरी चिंता जाहिर की।अरोड़ा ने कहा कि अब सरकार को किसानों के सब्र का और इम्तिहान नहीं लेना चाहिए। अब जल्द से जल्द उनसे बात कर मांगें माननी चाहिए।

डिप्टी सी एम दुष्यंत चौटाला ने प्रदेश के युवाओं को बड़ी राहत दी : डॉ जसविंदर खैहरा

पुष्पा रानी
कुरुक्षेत्र/बातों बातों में

कुरुक्षेत्र। एचटेट एच एस एस सी भर्ती को लेकर ग्रह जिले में परीक्षा केंद्र आने से प्रदेश भर के युवाओं को राहत मिली है। इस पर डॉ जसविंदर खैरा ने डिप्टी सी एम दुष्यंत चौटाला का आभार व्यक्त किया है।

डॉ खैरा ने कहा कि अब तक सरकारी नोकरियो में भर्ती की परीक्षाओ के केंद्र दूसरे जिलों में आने से युवाओं को दूसरे जिले में परीक्षा से एक दिन पूर्व ही जाना पड़ता था। जिससे प्रदेश का युवा वर्ग अक्सर परेशानी का सामना करता था। डिप्टी सी एम दुष्यंत चौटाला द्वारा जजपा के चुनावी घोषणा पत्र में कहा गया था कि अगर सत्ता में आये तो युवाओ की सरकारी नोकरियो की परीक्षाएं उनके ग्रह जिले में ही होगी ताकि बेरोजगार युवाओं को परेशान का सामना न करना पड़े। डॉ जसविंदर खैरा युवा जिला अध्यक्ष एवं हरियाणा शुगरकेन कंट्रोल बोर्ड के सदस्य है ,उन्होंने कहा कि प्रदेश के युवाओं की इस मांग को उन्होंने डिप्टी सी एम के सामने रखा था।डॉ खैरा ने कहा कि जजपा सरकार ने चुनावी घोषणा पत्र में किये गए वायदों को निभा कर युवाओ को राहत प्रदान की है। पछली सरकारों में सरकारी नोकरियो के लिए आयोजित परीक्षाओ के

लिए दूसरे जिलों में आते जाते थे कई बार दुर्घटना ओ का शिकार होते थे कभी लम्बे जाम की वजह से परीक्षा के तय समय पर पहुच नही पाते थे,जिसका मलाल परीक्षा से वंचित युवाओ को जिंदगी भर रहता था ।डॉ खैरा ने कहा डिप्टी सी एम दुष्यंत चौटाला ने प्रदेश के युवाओ को बड़ी राहत देने का काम किया है।

रणदीप सुरजेवाला का पोस्टकार्ड

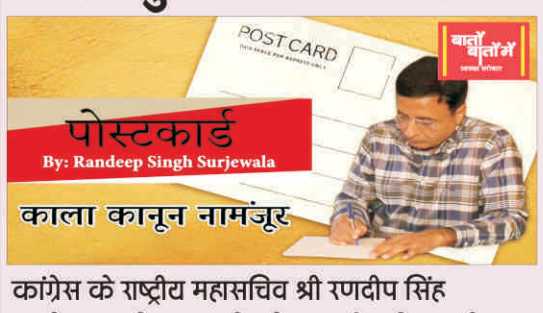

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला जी द्वारा जारी "पोस्टकार्ड" की अगली कड़ी –

"काले कानून नामंजूर"
खामोश सड़को पर देवता है,
वो हुक्मरान आराम फरमाए महलों में...
शांति से क्रांति का आगाज,
जगह जगह है यही आवाज...
तुम्हारे काले कानून है नामंजूर,
बैठे है तब तक टिकरी सिंधु गाजीपुर...

वर्तमान समय में भी गीता ज्ञान की प्रासंगिकता

प्रो. हवा सिंह
पूर्व रजिस्ट्रार कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

गीता के उपदेश की सुगंध कुरुक्षेत्र तक सीमित न रह कर बल्कि देश व विदेश में फैल रही है। संसार में अनेक सद्ग्रंथ हैं। काव्य ,महाकाव्य, दर्शन, धर्मग्रंथ आगम –निगम आदि में ज्ञान विज्ञान की संपदा व सौन्दर्य विद्यावान है।

इन सब के मध्य श्रीमद्भागवत गीता का स्थान स्वयं में अद्वितीयहै । गीता उपदेश का मूल सारन्याय और अन्याय, धर्म व अधर्म के बीच में युद्ध था न की एक जाति कादूसरी जाति या अगड़े– पिछड़े का युद्ध था। अंत में न्याय व धर्म की जीत हुई। गीता एक कर्मग्रंथ है। गीता का केंद्रीय विषय निष्काम कर्म है। वेदों में वर्णित सकाम भाव वाले कर्म कांडों व बतलाए गए अनुष्ठानों को करने से दिव्य भोग व ऐश्वर्य तो मिल सकते हैं, लेकिन इसे करने वालें को ये संसार चक्कर से बाँधे रखते हैं।क्योंकि ये सब मन,इन्द्रीय और शरीर की क्रिया द्वारा ही सम्पन्न किये जाते हैं। वेदों में कर्म कांड के मंत्रों की संख्या 80,000 है। गीता निष्काम कर्म का प्रतिपादन करती है। गीता का कर्म दर्शन जाति–पाति, छुआछूत, अंध विश्वास व कर्म कांडों तथा भाग्य जैसी धारणाओं को नकारता है। अंतरराष्ट्रीय गीता जयंती के अवसर पर बाबा रामदेव ने कहा कि मुझे 25 वर्षबाद गीता पढ़ने के बाद आभास हुआ कि अब तक मैं गीता के अनुसार ही कर्म करता आ रहा था।

देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा जिसको समाज अछुत, पिछड़ा ,किसान व मजदूर के नाम से जानता है,वास्तविकता में ये वर्ग ही गीता के निष्काम कर्म के पुजारी हैं। इन वर्गों ने गीता को पढ़ा भी नहीं है परंतु इन्होंने निष्काम कामों से मंदिरो, मस्जिदों, गिरजाघरों, गुरुद्वारों, भवनों, फैक्ट्रियों व सड़कों का निर्माण

किया है। समाज में स्वर्णिम जाति विचारधारा के उपासक इन सच्चे गीता वादियों को निम्न स्तरकी दृष्टि से देखते हैं। यहाँ तक कि गीता के लेखक ऋषीवेद व्यास जो कश्यप जाति से संबंध रखते थे, जिनकी वजह से आज संसार गीता ज्ञान से लाभान्वित हो रहा है। कोई भी गीता मनीषी उनके नाम का जिक्र भी नहीं करता। गीता ज्ञान का सरकारी करण से समाज के ग्रामीण व गरीब लोगों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है।

गीता का ज्ञान भाग्य दर्शन को भी नकाराताहै। यदि व्यक्ति अपने कार्य को लगातार निष्काम भाव सेकरता रहेगा तो उस मनुष्य को जीवन में सफलता अवश्य मिलेगी। कथा वाचक गीता का ज्ञान देते हैं परंतु यह तभी प्रभावी होगा जब उसका आचरण का स्तर भी उतना ही ऊँचा होगा। आज देश में गीता का प्रचारवप्रसार करने वालों के आचरणका व्यापारीकरण हो गया है जिसके कारण लोगों की आस्था महान ग्रंथों के प्रति कमजोर पड़ती जा रही है। गीता के ज्ञान में इतनी व्यापकता है कि आस्तिक व नास्तिक दोनों को एहसास कराती है कि एक ऐसी ऐश्वर्य शक्ति है जो हर व्यक्ति के अंदर काम कर रही है। गीता का ज्ञान केवल जीवन शैली ही नहीं सिखाता बल्कि मनुष्य को शान से मरनेकी कला भी सिखाती है। षूरवीर करण को पता था की युद्ध में हार निश्चित है और मृत्यु भी निश्चित है परंतु उनकी वचन बद्धता तथा दोस्ती की वजह से वे युद्ध के मैदान में डटे रहे। दुर्योधन व्यक्तिगत स्वार्थ व इच्छापूर्ति के लिए लड़रहा थाय वहीं अर्जुन संपूर्ण समाज के कल्याण, भलाई व न्याय के लिए लड़ रहे थे। गीता संवाद पर आधारित है और समाज की हर समस्या का हल सवांद से ही संभव है। जब देश में गीता का अनुसरण करने वाले जैसे पिछड़े,दलित,मजदूर व किसान वर्गों के निष्काम कार्यों को समान,गौरव,व्यकिगत बोलने की आजादी व न्याय समाज मेमिलना शुरू हो जाएगा उसी समय सेहमारा देश दुबारा सोने की चिड़िया बनने की और अग्रसर होता चला जाएगा। गीता का ज्ञान इतना आसान और व्यापक है कि जिस रूप में धारण करना चाहते हैं,वहीं नवीन ज्ञान का उदय होता है।आज देश को स्वामी दयानंद सरस्वती,गुरू नानक देव जी, रविदास जी,धन्ना भगतऔर कबीर जैसे सन्तों व महापुरुषों की आवश्यकता है जो गीता ज्ञान को जन–जन तक पहुँचा सकते हैं।

कविता

ईमान

जमीं से जुड़े होने की बात करते हैं
कुर्सियों पर बैठे लोग
नोटों में ईमान बेच देते हैं
खोटे सिक्के जैसे लोग

इज्जत उतारने की बात करते है
नजरों से गिरे हुए लोग
खिलखिला कर हंसते हैं
मुस्कुराहट छीनने वाले लोग

मजबूत जड़े काट देते हैं
घुटनों पर झुके हुए लोग
बरगद की बातें करते है
गमले में उगे हुए लोग

बड़ी बड़ी ढींगे मारते हैं
दो टके के लोग
समझदार होने का दावा करते हैं
दिमाग से पैदल लोग

हाथ से निवाला छीन लेते हैं
दूसरों के टुकड़ों पर पलते लोग
चममच से खाना खाते है
तलवे चाटने वाले लोग

शिखा शर्मा
@copyright

शख्सियत

आईएएस सुमेधा कटारिया का 31 वर्ष का प्रशासनिक सफर

आईएएस सुमेधा कटारिया

“ सुमेधा कटारिया साढे 31 वर्ष प्रशासनिक सेवा के बाद हुई सेवानिवृत्त,1989 में नियुक्त हुई थी हरियाणा की पहली महिला बीडीपीओ, अबोहर में जन्मीं सुमेधा ने कुरुक्षेत्र को बनाया अपनी कर्मस्थली ”

रणदीप रोड़
कुरुक्षेत्र (बातों बातों में)

कुरुक्षेत्र निवासी आईएएस सुमेधा कटारिया आज लगभग साढे 31 वर्ष की प्रशासनिक सेवा के बाद सेवानिवृत्त हो गई। वे आजकल हरियाणा एग्रीकल्चर मार्किटिंग बोर्ड में मुख्य प्रशासक के पद पर सेवारत थीं। सुमेधा कटारिया सबसे पहले 1989 में एचसीएस अलाईड में आकर हरियाणा की पहली महिला बीडीपीओ बनीं। उनकी पहली नियुक्ति कुरुक्षेत्र में ट्रेनिंग लेने के पश्चात तत्कालीन कुरुक्षेत्र जिले गुहला में हुई। उसके बाद सुमेधा 1992 में एचसीएस में चयनित हो गईं। 2016 में उनका चयन आईएएस के लिए हुआ और उन्हे 2005 का बैच अलॉट हुआ।

मूलरूप से पंजाब के शहर अबोहर की रहने वाली सुमेधा ने कुरुक्षेत्र को अपनी कर्मस्थली बनाया और कुरुक्षेत्र में बीडीपीओ, नगर परिषद प्रशासक, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड की मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सिटी मैजिस्ट्रेट, एसडीएम, अतिरिक्त उपायुक्त तथा उपायुक्त पद पर सेवारत रहीं।

इसके अलावा उन्होने एमडी शुगर मिल सोनीपत, एसडीएम पिहोवा, रजिस्ट्रार भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर, अतिरिक्त उपायुक्त कैथल व अंबाला, अतिरिक्त निदेशक शिक्षा विभाग हरियाणा, करनाल तथा पंचकूला में नगर निगम की आयुक्त और पानीपत में उपायुक्त के रूप में अपनी सेवाएं दी। गीता जयंती महोत्सव के आयोजन में सुमेधा कटारिया का विशेष सहयोग रहा। इस उत्सव ने जो अंतरराष्ट्रीय स्वरूप पाया है उसमें सुमेधा कटारिया के योगदान का भूलाया नही जा सकता।

सुमेधा कटारिया ने पंजाब विश्वविद्यालय से एमए अंग्रेजी की परीक्षा पास की और सबसे पहले एफसी महिला कॉलेज हिसार में अंग्रेली के लैक्चरर के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। उन्होने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से राजनैतिक विज्ञान और हिंदी साहित्य में एमए की परीक्षा पास की और एमए कम्यूनिटी एजुकेशन की डिग्री डीसी मोनफोर्ट, लेस्टर (यूके) से प्राप्त की। गुजवि हिसार से एमबीए की परीक्षा उत्तीर्ण की। सुमेधा एक कुशल प्रशासनिक अधिकारी होने के साथ–साथ प्रख्यात कवियत्री भी हैं। उनके 7 काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें अमलतास, सफर लफ्जों का–मैं से तुम तक, शिवामन, शरणागति, माँ ठंडी छाँ, मैं शरणागत मेरे साहेब, धरा उवाच–इदम नमम् शामिल हैं। वे सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में गहरी रूचि रखती हैं। वे कुरुक्षेत्र की कई धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से जुडी हुई हैं।

सूर्य नारायण की उपासना से जातक को मिलती हैं पद प्रतिष्ठा, सरकारी नौकरी एवं सरकार मे पद

पंडित पवन शर्मा

भारतीय शास्त्रों मे सूर्य की आराधना का बड़ा ही महत्व बतलाया गया हैं । धर्म शास्त्रों के अनुसार सूर्यदेव की साधना का अक्षय फल मिलता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य कुंडली मे पिता का, मान–सम्मान, यश–कीर्ति, पद–प्रतिष्ठा का कारक माना गया हैं। जो व्यक्ति सच्चे मन से सूर्य नारायण की आराधना एवं साधना करते हैं सूर्य देव प्रसन्न होकर अपने भक्तों को सुख–समृद्धि, मान–सम्मान, पद–प्रतिष्ठा, सरकारी नौकरी एवं अच्छी सेहत का आशीर्वाद प्रदान करते हैं। जो जातक सरकारी नौकरी पाना चाहते हैं उन्हें तो सूर्य देव की आराधना एवं उपासना अवश्य ही करनी चाहिए। ज्योतिष शास्त्र अनुसार रविवार का दिन सूर्यदेव को समर्पित होता है। इसी दिन सूर्यदेव की उपासना करनी चाहिए।ज्योतिष में रविवार के दिन उपाय करने से सूर्य देव का आशीर्वाद प्राप्त होता है और जातकों को मनो वांछित फल की प्राप्ति होती है।

सूर्यदेव की कैसे करें आराधना

रविवार के दिन जातकों को शारीरिक एवं आंतरिक रूप से शुद्ध होकर सूर्य देव की आराधना करनी चाहिये। नीती रूप से सूर्य नारायण को लाल फूल, गुड़ अथवा लाल सिंदूर डाल कर जल अर्पित करना चाहिए। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार जल चढ़ाने से सूर्य देव प्रसन्न होते हैं। जल अर्पित करते समय सूर्य नारायण के कुछ विशेष मंत्रो से भगवान सूर्य नारायण ध्यान अवश्य करना चाहिये। साधना में मंत्रों का जप करने से मनोकामनाएं शीघ्र पूर्ण होती है। सुख–समृद्धि, अच्छी सेहत और सरकारी नौकरी पाने के लिए सूर्य ग्रह के मंत्र बेहद कारगर होते हैं। ये मंत्र आपके भीतर एक नई ऊर्जा का संचार पैदा करते हैं।

सूर्य मंत्र –

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्ध्यं दिवाकर।।

ॐ घृणि सूर्याय नमः।।

ॐ ऐहि सूर्य सहस्त्रांशों तेजो राशे जगत्पते, अनुकंपयेमां भक्त्या, गृहाणार्घय दिवाकर:।।

ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्यः क्लीं ॐ।।

लोगों की पहली पसंद बातों बातों में

श्री ब्राह्मण एवं तीर्थोद्वार सभा, कुरुक्षेत्र

की ओर से

सभी कुरुक्षेत्र व प्रदेशवासियो को

नववर्ष Happy New Year 2021

मकर संक्रांति व लोहड़ी

की हार्दिक शुभकामनाएँ

जय नारायण शर्मा
(एडवोकेट) मुख्य सलाहकार

पंडित पवन कुमार शास्त्री
प्रधान

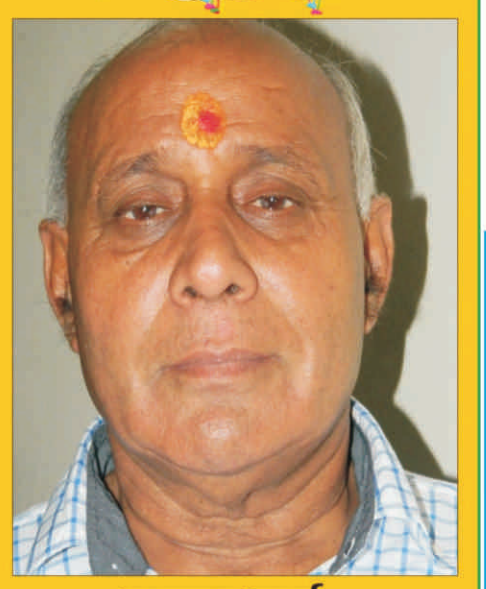

रामपाल शर्मा
प्रधान महासचिव

विरासत–लोकसंस्कृति सांग

एक प्रयास जिसने पैदा किया सांग में नया जीवन

पवन सौन्टी

किसी भी प्रदेश की संस्कृति का केंद्र बिंदु वहां का लोकनाट्य होता है। हरियाणा में लोकनाट्य की परमपरा सैंकड़ों वर्षों पुरानी है जिसे सांग के नाम से जाना जाता है। शुरुआती दौर में इस लोकनाट्य का प्रचलन भगत के रूप में था। उससे विकसित हो कर यह सांगीत बना। यही सांगीत आगे चलकर सांग के रूप में स्थापित हुआ।

इसी सांगीत से जहां एक ओर तो सांग का प्रचलन हुआ वहीं साथ लगते प्रदेशों मे सांगीत ने ही अलग–अलग नामों से पहचान बनाई। इसने उत्तर प्रदेश में नौटंकी, राजस्थान में ख्याल, गुजरात में भवई व मध्य प्रदेश में माच का रूप धारण किया। इन सब लोक नाट्य विधाओं का मूल हरियाणा का सांगीत ही है। दुखद पहलू यह रहा कि हरियाणा का यह लोकनाट्य जहां प्रदेशों में अलग–अलग नामों से अपनी पहचान बनाता गया वहीं अपनी जन्म स्थली हरियाणा में एक समय लुप्त होने के कगार पर भी पहुंच गया। सांग को स्थापित करने में जहां अनेकों सांगियों ने अपना पसीना बहाया वहीं इसको गुमनामी के अंधेरों से बाहर लाने में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के युवा एवं सांस्कृतिक विभाग के निदेशक एवं हरियाणवी के जाने माने कलाकार अनूप लाठर ने जी तोड़ मेहनत की। हालांकि अपनी शिक्षा प्राप्ति के दौरान लाठर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में रहे और हिंदी के साथ पंजाबी नाटकों में सराहनीय भूमिकाऐं निभाई। उन्होंने रानी जिंदा नामक नाटक में मुख्य भूमिका के साथ अमरीका व कनैडा सहित विदेशों में भी 1960 के दशक में खूब धूम मचाई, लेकिन उनका अपनी हरियाणवी संस्कृति से लगाव कम नहीं हुआ। विदेशी शो के दौरान ही उन्होने ठान लिया कि हरियाणवी संस्कृति को पूर्ण प्रतिष्ठित किया जाएगा।

इसे लेकर उन्होंने सबसे पहले हरियाणा के लुप्त प्रायरू हो चुके लोकनाट्य सांग को लिया। इसी कड़ी में उन्होंने हरियाणवी आकैस्ट्रा नामक नई विधा को भी जन्म दिया।अनूप लाठर के अनुसार जब उन्होंने हरियाणवी संस्कृति का गहनता से अध्ययन किया था तो उन्हें अहसास हुआ था कि हरियाणा का लोक नाट्य सांग लुप्त प्रायरू हो चुका है। उनके अनुसार सांग एक व्यापक विधा है जिसके प्रस्तुतिकरण के तरीके को विश्व में भिन्न भिन्न नामों से जाना जाता है। ग्रीक में इसको ऐरीना थियेटर के नाम से जाना जाता है तो अमेरीका और यूरोप में इसे थियेटर इन दॉ राऊंड के नाम से परिभाषित किया जाता है। 1947 में प्रसिद्ध नाटककार मैंचो जोन्स ने पूरे विश्वव की अलग–अलग मंचीय विधाओं का अध्ययन करने के पश्चात अमेरिका में थियेटर इन दॉ राऊंड की परिपाटी शुरु की। इसी प्रकार विश्व प्रसिद्ध जर्मन नाटककार ब्रैक्ट की ब्रैक्टियन थियेटर शैली को भी सांग में सम्पूर्ण रूप से जिवंत देखा जा सकता है। इस थियेटर प्रणाली में थ्यूरी आफॅ ऐलीनेशन जिसके अनुसार नाटक का मैलोड्रामा कलाकार को जब दर्शक से दूर ले जाने लगता है तो वहीं पर उस मनोदशा को तोडने की परिपाटी है। सांग में यह परमपरा नकलिये के तौर पर निभाई जाती है और वह समय–समय पर मंच को दर्शकों से जोड़ता है और अनजाने में ही उस मैलोड्रामा को समाप्त करता है।

इसी के साथ–साथ ही बेड़ा बांधने वाला मुख्य कलाकार कभी कभी बीच में सीटी का प्रयोग करके इस मनोदशा को क्रियांवित करता है। अनूप लाठर के अनुसार उन्होंने लम्बे समय तक हरियाणा के जाने माने सांगी पं. रामकिशन ब्यास के साथ सांग पर काम किया तो पाया कि सांग ऐसी अनूठी विधा है जिसमें हर सांस्कृतिक विधा छुपी है। उन्होंने सांग के उत्थान का बीड़ा उठाते हुए यह ठान लिया कि सांग को पुनरू स्थापित करने के लिये पहले इससे जुड़ी सभी विधाओं को जीवित किया जाए। इसी कड़ी में उन्होंने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में हरियाणवी सांस्कृतिक प्रयोगशाला यानी हरियाणा दिवस समारोह रत्नावली को माध्यम बनाया और सभी विधाओं को एक–एक करके रत्नावली के मंच से उभारना अरम्भ कर दिया। सांग में साजिंदों की जरूरत होती थी सो हरियाणवी आरकैस्ट्रा के माध्यम से युवा साजिंदे तैयार होने लगे। एक ऐसा भी दौर था जब मंच पर आकर हरियाणवी बोलना भी लोगों की सोच से परे था। वक्ताओं को इसमें झिझक महसूस होती थी। मंच से हरियाणवी बोलने की झिझक मिटाने के लिये युवाओं के लिये हरियाणवी भाषण प्रतियोगिताओं को आयोजन आरम्भ हुआ। सांग में रागनी पक्ष को मजबूत करने के लिये हरियाणवी रागनी व रागनी कम्पीटीशन को रत्नावली का अंग बनाया गया।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रांगण में रत्नावली समारोह के दौरान आयोजित सांग का विहंगम दृश्य

फाइल फोटो

नृत्य पक्ष को मजबूत बनाने के लिये हरियाणवी एकल नृत्य प्रतियोगिताएं रत्नावली के मंच पर आई। सांग में हरियाणवी गायन को मजबूती देने के लिये लोक गायन व हरियाणवी समूह गान आदि प्रतियोगिताएं आरम्भ की गई। सांग में मखौलियों की भूमिका भी अहम होती है सो उन मखौलियों को तराशने के लिये हरियाणवी चुटकुला प्रतियोगिताऐं आरम्भ की गई। सांग के नाट्य पक्ष को मजबूत बनाने के लिये हरियाणवी नाटक प्रतियोगिताओं को आयोजन आरम्भ किया गया। दूसरी और विद्यार्थियों को साजिंदों के साथ जोडने के लिये एकल लोक वाद्य प्रतियोगिताऐं भी आरम्भ की गई। यह कोई एक दिन अथवा एक समारोह का प्रयास नहीं था अपितु रत्नावली नामक हरियाणवी सांस्कृतिक प्रयोगशाला की वर्षों की मेहनत इसमें काम आई। इस सतत प्रक्रिया में लम्बे वर्षों के अंतराल पर हरियाणवी की सभी विधाएं जिंदा होने लगी। हरियाणवी में सांग से जुड़ी सभी विधओं के मजबूत होने के बाद अनूप लाठर ने उपयुक्त समय पाकर हरियाणवी लोक नाट्य यानी सांग को पुन: स्थापित करने का भागीरथी प्रयास आरम्भ कर दिया। पहले व्यवसायिक सांगियों को तलाशा गया जो कि बहुत ही कम संख्या में प्रदेश में मिलते थे। उनको विश्वविद्यालय के मंच पर लाकर उनका हौंसला तो बढ़ाया ही साथ में युवा कलाकारों को भी एक दिशा दे दी। इसके साथ ही यह भी घोषणा कर दी गई कि अगले साल से सांग रत्नावली की प्रतियोगिताओं का भाग होगा। अनूप लाठर ने उस मंच से यह बीड़ा जन समूह के सामने उठाया कि अब हम सांग को पुनरू स्थापित करेंगे और उसकी कीर्ति को चरम पराकाष्ठा तक पहुंचाएंगे। पहले वर्ष में सांग प्रतियोगिता के आयोजन के लिये सिर्फ 30 मिनट का समय रखा गया जिसमें 4 प्रौफैसनल साजिंदे व 2 गायकों को लीड गायक के तौर पर भी इजाजत दी गई। हालांकि लोगों ने प्रश्र उठाया कि इस प्रकार तो विद्यार्थियों की प्रतिभागिता केवल नाम मात्र की ही रहेगी, लेकिन उनकी शंका को यह बता कर दूर किया गया कि यही प्रयोग हरियाणवी आरकैस्ट्रा के शुरुआती दौर में भी किया गया था जिसके आरम्भ में 3 साजिंदों को लीड में भाग लेने की छूट दी गई थी लेकिन धीरे धीरे उसको कम करके विद्यार्थियों की भागीदारी प्रमुख होती गई। इसमें लाठर द्वारा व्यक्तिगत तौर पर यह भी प्रयास किया गया कि हरियाणवी प्रेमी कालेज सांग प्रतियोगिता में भाग लें। विभाग की ओर से भी यह निर्देश जारी किये गए कि सांगों को तैयार करने के लिये दिग्गज सांगियों की भी मदद ली जाए। इस बात का भी ध्यान रखा गया कि सांगों में किसी प्रकार का सांस्कृतिक प्रदूषण न हो और उसमें गाई जाने वाली रागनियां किसी भी तौर पर फिल्मी संगीत से प्रभावित न हों ताकि सांग का मूल रूप बना रहे। पहले वर्ष की सांग प्रतियोगिता में 4 कालेजों ने भाग लिया। दूसरे वर्ष इसकी समयावधि वढ़ाकर 30 से 45 मिनट व तीसरे वर्ष एक घण्टा और चौथे वर्ष में इसकी अवधि ढेड़ घंटे निश्चित कर दी गई। इन्हीं वर्षों में लड़कियों की भागीदारी को भी प्रोत्साहित किया गया। इसके नतीजे भी चौंकाने वाले थे। कहां तो एक ओर सांग में महिलाओं का दर्शक के तौर पर जाना भी प्रतिबंधित था वहीं अब सभ्रांत घरों की शिक्षित बच्चियों ने सांग की प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी कला का परचम लहराना आरम्भ कर दिया। इसी दौरान सूचाना एवं जन सम्पर्क विभाग हरियाणा ने भी 2005 के आस पास चण्डीगढ़ में सांग उत्सव का आयोजन आरम्भ किया। सन 2008 में श्री केके खण्डेलवाल आईएएस, तत्कालीन अतिरिक्त प्रधान सचिव, मुख्यमंत्री हरियाणा व आयुक्त एवं सचिव सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के समक्ष प्रस्ताव रखा गया कि क्यों न व्यवसायिक सांग उत्सव के साथ एक युवा सांग माहोत्सव का भी आयोजन किया जाए जिसमें कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के युवा एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग द्वारा आयोजित सांग प्रतियोगिता में पहले 3 स्थान पाने वाली टीमों की प्रस्तुति चण्डीगढ़ में की जाए। अनूप लाठर के अनुसार उनका प्रस्ताव स्वीकार हुआ और 18 से 20 जनवरी 2008 तक चण्डीगढ़ के सैक्टर 18 स्थित टैगोर थियेटर में सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग हरियाणा व युवा एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में युवा सांग उत्सव का आयोजन किया गया।

सांग की स्टेज से सांग के बारे में जानकारी देते अनूप लाठर

अनूप लाठर के अनुसार इसके आयोजन में सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के सांस्कृतिक कार्यक्रम परियोजना निदेशक भाल सिंह बलहारा का योगदान भी काफी सराहनीय रहा। 2009 से सांग प्रतियोगिताओं को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यायल द्वारा आयोजित युवा समारोहों का भी अंग बना दिया गया और इस तरह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बढ़–चढ़ कर युवा समारोहों व रत्नावली की सांग प्रतियोगिताओं में आगे बढ़ कर भाग लेने लगे। अब हर वर्ष लग भग 10 सांग टीमें रत्नावली व कुवि के युवा समारोहों में अपनी प्रस्तुतियां देती हैं। अब तो उम्मीद यह भी की जाती है कि आने वाले वर्षों में विद्यार्थियों द्वारा और भी बढ़–चढ़ कर इसमें भागीदारी की जाएगी। इसका परिणाम यह हुआ कि सांगी कालेजों में सांग तैयार करवाने लगे, इस कारण उन्हें प्रतिष्ठा तो मिली ही साथ ही उनकी आजिविका भी अच्छी चलने लगी। लोक सांजिंदे जिन्होंने कभी अपने साजों को नकारा जान कर खूंटियों पर टांग दिया था, की तो पौ बारह ही होने लगी। निसंदेह आज हरियाणा का लोकनाट्य सांग अपनी पहचान बना चुका है। अब जहां इसे युवा कलाकारों द्वारा कालेजों व विश्वविद्यालयों में किया जाता है वहीं गावों व शहरों में भी मंदिर आदि बनवाने के सामूहिक कार्यों में इसे फिर से धन एकत्रित करने का जरिया बनाया जाने लगा है। अब यह कहा जा सकता है कि अनूप लाठर की बदौलत हरियाणवी संस्कृति अपने चरम पर पहुंच रही है। अब हरियाणावी मुम्बई तक तो अपनी दस्तख दे चुकी है अगर सरकार का प्रोत्साहन रहे तो निसंदेह वह दिन दूर नहीं जब हरियाणा की संस्कृति को पूरे विश्व में स्वीकार किया जाएगा।

.....एक नई क्रांति का संदेश!

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में मंच पर सांग प्रस्तुत करती छात्राऐं

फाइल फोटो

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित सांग प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी

फाइल फोटो

DISTT BAR ASSOCIATION KURUKSHETRA

की ओर से

सभी नगर वासियों व देश वासियों को

Happy New Year 2021

नववर्ष

मकर संक्रांति व लोहड़ी

की हार्दिक शुभकामनाएँ

GURTEJ SINGH SEKHON
PRESIDENT

PARAMJEET SAINI
VICE PRESIDENT

SADHU RAM SHARMA
GEN. SECT

AKHIL VERMA
CASHIER

HIMANSHU AGGARWAL
JOINT SECT

सभी नगर वासियों व देश वासियों को

नववर्ष

Happy New Year 2021

मकर संक्रांति व लोहड़ी

की हार्दिक शुभकामनाएँ

विशाल सिंगला

समाजसेवी एवं वरिष्ठ भाजपा नेता,कुरुक्षेत्र

रामशरण अग्रवाल

शुभम गुप्ता

गौरव मित्तल

विनोद सिंगला

राजीव घराड़सी

अमन गर्ग

अमित गोयल

2021 में कैसे रहेंगे आपके ग्रह नक्षत्र

ईश्वरीय ध्यान, धर्म और परोपकार करना नवीन वर्ष 2021 के लिए आवश्यक है : डॉ.सुरेश मिश्रा

श्री दुर्गा देवी मन्दिर पिपली के अध्यक्ष और कॉस्मिक एस्ट्रो पिपली (कुरूक्षेत्र) के डायरेक्टर ज्योतिषा चार्य व वास्तु विशेषज्ञ डॉ. सुरेश मिश्रा ने नववर्ष 2021 का राशिफल चन्द्र राशि अनुसार व लग्न अनुसार बताया है । इस वर्ष का भाग्यॉक 5 है जिसके स्वामी बुध ग्रह है जो कि सम्पूर्ण विश्व में सामंजस्य बनाने में सहयोग करेगा ।

हिन्दू ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार चौत्र मॉस के शुक्ल पक्ष प्रथम नवरात्रि 13 अप्रैल 2021 से 'राक्षस' नवीन सम्वत 2078 प्रारम्भ होता है जिसका राजा और मन्त्री मङ्गल ग्रह है। अधिकतर सभी लोग स्वार्थ वश निज कार्यों में लगे रहेंगे ,फसलों के लिए मध्यम वर्षा रहेगी। भय और आशंकाओं से भरा वातावरण रहेगा। अग्निकांड और प्राकृतिक आपदाएं कई देशों में होगी। अपने खान पान का उचित ध्यान रखें और ईश्वरीय ध्यान,मंत्र जप और परोपकार ही आपके जीवन को अच्छा बना सकता है। पेड़ पौधों और जीव जन्तुओं की सेवा करें।आपको ज्योतिष और अंक विद्या के माध्यम से बताने की कोशिश करता हूँ कि क्या है वर्ष 2021 में आपका राशिफल। इसके लिए हमारे मुख्य सम्पादक और ज्योतिष विशेषज्ञ उत्तरदायी नहीं है। सभी का जीवन अच्छा रहे इसी मंगल कामना से निर्देश दिए गये है।

आपकी आर्थिक स्थिति इस वर्ष अच्छी रहेगी, कार्यक्षेत्र में सकारात्मक बदलाव होंगें, कुछ लोग अपनी नॉकरी, बिजनेस आदि भी बदल सकते हैं। जमीन जायदाद में निवेश कर सकते हैं, घर का रेनोवेशन करवा सकते हैं, निवास स्थान में बदलाव हो सकता है, सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, उच्च पद प्रतिष्ठित लोगों से संबंध बनेंगे। धार्मिक स्थल की यात्रा का योग हैं। जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रहेगें। अविवाहित जातको के विवाह होने के प्रबल योग है। पिताजी तथा घर में बड़े बुजुर्गों के स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखे। माताजी भावनात्मक रूप से उपेक्षित महसूस करेंगी, आपको माताजी के साथ समय व्यतीत करना चाहिए। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, बस खानपान में सावधानी रखें, सुबह की सैर, कसरत इत्यादि करे अन्यथा वजन बढ़ने के योग है।

उपाय

1)–हनुमान चालीसा का नियमित रूप से पाठ करें।
2)–सोमवार शिवलिंग का जलाभिषेक करें।
3)–सूर्यदेव को जल अर्पित करें।
4)– कुंडली में मंगल व गुरु की स्थिति के अनुसार योग्य ज्योतिष विशेषज्ञ के निर्देश अनुसार ही मूंगा व पुखराज धारण करें।

आपके लिए ये वर्ष थोड़ा संघर्ष पूर्ण रहने वाला है, आपको कड़ी मे हनत व आत्मविश्वास की जरूरत होगी, कार्यक्षेत्र में बदलाव होंगें जो आपको बहुत अधिक पसंद नही आएंगे, अपने वरिष्ठजनो तथा अधिकारी आपके संबंधित तनाव पूर्ण हो सकते हैं, वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, आपकी कार्यशैली, साहस, क्षमता में वृद्धि होगी, नाम व प्रसिद्वि में वृद्धि होगी। कानूनी विवाद आपके हल होंगे, प्रेम संबंधों में मतभेद हो सकता है।आवेश में आकर कोई निर्णय न लें। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना होगा।

उपाय

1)–नियमित रूप से दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
2)–प्रत्येक शनिवार को शनि मंदिर दर्शन करें।
3)–महिलाओं व बच्चों को वस्त्र का दान करें।
4)–ज्योतिष विशेषज्ञ के निर्देशन में ग्रहों की स्थिति अनुसार पन्ना व नीलम रत्न धारण करें।

कार्यक्षेत्र के आधार से यह वर्ष आपके लिए बहुत अच्छा रहेगा, कला, साहित्य, लेखन, खेल के क्षेत्र के लोगो को विशेष अवसर प्राप्त होंगे अपनी प्रतिभा दिखाने के, आप अपने विरोधियों पर हावी रहेंगें, आय के नये साधन बनेगें, आप ऊर्जा वान रहेगें क्रोध और आवेश से आपको बचना होगा, परिजनों से मतभेद के योग है, रक्त विकार हो सकता हैं, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे। निवेश सावधानी सोच विचार कर ही करें। इस वर्ष आपको व्यर्थ के वाद –विवाद से दूर रहना होगा, अन्यथा कोर्ट कचहरी तक विवाद जा सकता है। आपको आपकी मेहनत का लाभ मिलेगा, नाम व प्रसिद्वि प्राप्त होगी। प्रोपर्टी में निवेश कर सकते है। परेशानी आएंगी विरोधी परेशान करेंगे किन्तु आप अपनी कड़ी मेहनत, लग्नऔर धैर्य से विजय प्राप्त कर लेंगे।

उपाय

1)– तुलसी के पौधे को सींचे, तुलसी के पास घी का दीपक जलाएं।
2)– जरूरतमंद विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री वितरित करें।
3)–भगवान विष्णु की पूजा करें।
4)–कुंडली मे बुध की स्थिति को जानकर योग्य ज्योतिष विशेषज्ञ के निर्देशन में पन्ना धारण करें।

इस वर्ष आप विदेश संबधी कारोबार, नॉकरी में लाभ प्राप्त करेंगे, साझेदारी में लाभ होगा, नए कॉन्ट्रेक्ट, नए प्रोजेक्ट पर काम प्राप्त होगा, शिक्षा, प्रोपर्टी, मेडिकल, रेस्टोरेंट जैसे कार्य करने वाले लोगो को विशेष लाभ होगा।सामाजिक, राजनीतिकक्षेत्र के लोगो को वर्ष के अंत मे पद प्रतिष्ठा की प्राप्त होगी। जीवन साथी से वाद विवाद के योग हैं, आपको धैर्य व संयम से कम लेना होगा। माता पिता के साथ संबधों में मधुरता रहेगी। घर की साज सज्जा पर खर्च के योग हैं। आपके प्रतिद्वंद्वी विरोधी शांत और कमजोर रहेंगें।संतान की ओर से मन प्रसन्न रहेगा। वाहन सावधानी से चलाये। इस वर्ष आप नया ज्ञान कौशल प्राप्त करेंगे।

उपाय

1)–हनुमान जी की नियमित रूप से पूजा पाठ करें।
2)–दुर्गा चालीसा का पाठ नियमित रूप से करें।
3)–कुत्ते की सेवा करें।
4)–पीपल के पेड़ को सींचे।
5)–ज्योतिष विशेषज्ञ के निर्देशन में ग्रहों की स्थिती अनुसार मोती,मूंगा या पुखराज रत्न पहनें ।

DR SURESH MISHRA
D.Sc. (ASTROLOGY & VASTU SCIENCE)
Chairman- Maa Durga Charitable Trust
Chairman- Shri Durga Devi Mandir
Chairman- Shiv Jyotish & Vastu Kendra
Director- Cosmic Astro OPC Pvt. Ltd.
Scientific Astro Vastu Expert
Advance Remedial Expert, Divine Healer
Life Coach, Numerologist
Signature Analyst, Spiritual Coach
Pyra Vastu Expert
+91 7419211111, 7419213568
mishra@cosmicastro.com
www.cosmicastro.com
www.drsureshmishra.com
Shri Durga Devi Mandir, Nr. Bus Stand
Pipli - 136131. Kurukshetra (Haryana) INDIA

कार्यक्षेत्र के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा, आय के नए साधन विकसित होंगें, ऊर्जावान रहेंगे, विदेशों यात्रा के योग हैं। नए लोगों से मित्रता होगी, भागदौड़ मेहनत की अधिकता रहेगी। भाई बहनों से रिश्ते में मधुरता रहेगी, जीवनसाथी से सम्बंध मधुर रहेंगे। प्रेम संबंध में तनाव का हो सकता है। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। ध्यान, अध्यात्म योग की तरफ आपका रुझान बढ़ेगा। जमीन जायदाद संबंधित समस्या का समाधान होगा। आप प्रोपर्टी में निवेश भी कर सकते हैं। अविवाहित जातको के विवाह के योग हैं। पार्टनरशिप में लाभ होगा। कारोबार का विस्तार होगा। जिसके लिए मेहनत बहुत होगी। संतान के सवास्थ्य या शिक्षा को लेकर आपको चिंता हो सकती है, सचेत रहें।

उपाय

1)–हनुमान चालीसा का नियमित रूप से पाठ करें।
2)–तुलसी को नियमित रूप से सींचे।
3)–महीने में एक दिन धार्मिक स्थल पर सेवा करें।
4)– कुंडली मे ग्रहों के बलाबल व ज्योतिष विशेषज्ञ अनुसार माणिक, मूंगा या पुखराज धारण करें।

कारोबार की दृष्टि से यह एक सफल वर्ष हागा आपके लिए। आय में वृद्धि होंगी, आपके संग आपका परिवार भी तरक्की करेगा। आपकी मेहनत आपकी कार्यशैली की प्रशंसा होगी। पदोन्नति के भी योग है। इस वर्ष आप प्रोपर्टी भी खरीद सकते है। उधार लेने से बचें, जो धन आपके पास उसको ही निवेश करें। कारोबार में अतिरिक्त जोखिम नुकसान भी दे सकता है। व्यापार, नॉकरी के साथ साथ अपनी सेहत का भी ख्याल रखे, सवास्थ्य विकार हो सकता हैं, सवास्थ्य की अनदेखी न करें। साथ ही अपने पारिवारिक जीवन पर भी ध्यान दें।परिजनों वादविवाद होने के योग है। आपको संतुलन बिठाना होगा, घरपरिवार और कार्यक्षेत्र में। प्रेमसंबंधों में भी तनाव पैदा हो सकता है। आपको मानसिक रूप से मजबूत रहना होगा। धीरे धीरे संबधों में सुधार होगा।

उपाय

1) –गणेश जी पूजा करें।
2)–शनिवार माँ काली के दर्शन करें।
3)–वृद्ध व दिव्यांगों की सेवा सहायता करें।
4)–योग्य ज्योतिषी को कुंडली दिखा कर पन्ना,डायमंड या नीलम रत्न धारण करें।

आपके लिए यह वर्ष कार्यक्षेत्र की दिर्ष्ट सेसकारात्मक है, अपने सपनो को पूरा करने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। आपके पराक्रम व आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होगी। अपने काम से काम रखें, आपके शत्रु आपके विरोधी आपसे उलझने की भरपूर कोशिश करेंगे, आपको व्यर्थ के वाद विवाद से दूर रहना होगा। आर्थिक सिथति आपकी पहले से बेहतर होगी।घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगें, जीवनसाथी का भरपूर सहयोग मिलेगा, रिश्ते में मधुरता बढ़ेगी। माता के स्वास्थ्य का ख्याल रखें। संतान की चाह रखने वाले जातकों को संतान प्राप्त होगी। विवाह योग्य अविवाहित जातको का विवाह संपन्न होगा। दूर स्थान की यात्रा के योग हैं। विदेश यात्रा के योग है।

उपाय

1)–कुलदेवी अथवा माँ दुर्गा की पुजा करें।
2)–लक्ष्मी–नारायण की पूजा करें।
3)–कुते को प्रतिदिन भोजन दे।
4)–योग्य ज्योतिषी को कुंडली दिखा कर डायमंड, पन्ना या नीलम रत्न धारण करें।

आपके लिए नवीन वर्ष अच्छा रहेगा, कार्यक्षेत्र में विस्तार होगा, रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे, आय के नए साधन विकसित होंगें। इस वर्ष आप भाग्य से ज्यादा अपनी मेहनत और कौशल पर विश्वास कर आगे बढ़ेगे, आपके पराक्रम, साहस, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आपको दो चीजों का विशेष ध्यान रखना होगा, एक तो आपकी सेहत किसी भी छोटी बीमारी और चोट को अनदेखा न करें और दूसरा अपने गुस्से पर काबू रखना होगा। वाणी पर संयम रखना होगा। आपके क्रोध के कारण आपके पारिवारिक और सामाजिक संबंध खराब होने का भय है। धार्मिक स्थलों की यात्रा के योग है। धर्म, अध्यात्म में आस्था विश्वास और रुचि बढ़ेगी। जीवनसाथी से संबंध मधुर रहेंगे। भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा। माता पिता के स्वास्थ्य का खयाल रखना होगा। वाहन चलाने में और यात्रा करने में सावधनी बरतें।

उपाय

1)–सूर्यदेव को तांबे के लोटे से जल अर्पित करें।
2)–गरीबों या जरूरतमन्द को भोजन करवाए।
3)–हनुमानजी की नियमित रूप से पूजा करें।
4)– सोमवार भगवान शिव जी का जलाभिषेक करें।
5)–ज्योतिष विशेषज्ञ के निर्देशन में ग्रहों की स्थिती अनुसार मोती,मूंगा या पुखराज रत्न पहनें ।

आपके लिए आर्थिक रूप से बहुत बेहतर साबित होगा, आय के नए साधन बनेंगें, निवेश का लाभ होगा, प्रभावशाली लोगो से आपके संबंध स्थापित होंगें। पद–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, साथ ही आपके अंदर ईर्गा भी बाद जाएगी जिसका आपको नुकसान आपके वाणी पर संयम न रखने से हो सकता है। साझेदार से रिश्ते खराब हो सकते हैं, आपको धैर्य व संयम से आगे बढ़ना होगा। आपकी कार्यशैली की प्रशंसा होगी, आर्थिक सामाजिक क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे। अगर आप घर या गाड़ी लेने का प्लान कर रहे है तो आप ले सकते है।

उपाय

1)–आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।
2)–हनुमान् चालीसा का पाठ करें।
3)–गाय को हरा चारा खिलाये।
4)– ज्योतिष विशेषज्ञ को कुंडली दिखा कर मूंगा,माणिक या पुखराज रत्न धारण करें ।

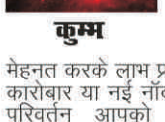

आप आर्थिक रूप से मजबूत होंगे, नए प्रोजेक्ट पर काम करेंगे, कार्यक्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आपके पक्ष में होंगे, आपकी कार्यशैली की प्रशंसा होगी, आपकी उन्नति के योग है। आप नया ज्ञान कौशल नया अनुभव प्राप्त करेंगे। निवेश में सावधानी बरतें, बहुत सोच विचार कर निवेश करें, जोखिम के काम मे निवेश न करें। धन का नुकसान हो सकता है। साथ ही व्यर्थ के खर्चो में भी कटौती करें तो आपके लिए अच्छा है। परिवार में मांगलिक कार्य होने के योग है। आपको इस वर्ष यादगार यात्रा के अवसर प्राप्त होंगे। पैतृक संपत्ति का कोई विवाद है तो इस वर्ष सुलझ जाएगा।अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें ,पैरो अथवा सिर में समस्या हो सकती हैं। अपनी योग्यता का ध्यान रखें ।

उपाय

1)–शनि चालिसा का पाठ करें।
2)–धार्मिक कार्यक्रम में सेवा करें।
3)–बुजुर्गों की सेवा सहायता करें।
4)– योग्य ज्योतिषी को कुंडली को दिखा कर नीलम,डायमंड या पन्ना रत्न धारण करें।

आपकी जिंदगी में सकारात्मक बदलाव होंगें। आप अतिरिक्त मेहनत करके लाभ प्राप्त करेंगे, नए कारोबार या नई नॉकरी में आपको परिवर्तन आपको सोच समझ करना होगा, अगर आप कोई कर्ज हैं तो आप इस वर्ष कर्ज चुकाने में सफल हो सकते हैं, निवेश सोच विचार कर करें, गलत निर्णय से धन हानि के योग हैं। आपके भौतिक सुख साधन में वृद्धि होगी, आय के नए अवसर प्राप्त होंगें। काम के लिए दूर स्थान की यात्रा के योग है। जिसके सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। आपके कार्यक्षेत्र में आपको नाम व प्रसिद्वि मिलेगी। आपकी सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन मिलाजुला रहेगा, अध्यात्म योग में रुचि बढ़ेगी, नया ज्ञान नया कौशल सीखने में रुचि रहेंगी। पढ़ाई लिखाई में सुखद परिणाम प्राप्त होंगे ।सवास्थ्य उत्तम रहेगा।

उपाय

1)–शनिदेव के दर्शन करें, पूजा करें।
2)–हनुमान चालीसा का पाठ करें।
3)–मछलियों को भोजन डाले।
4)–योग्य ज्योतिष विशेषज्ञ को कुंडली दिखा कर नीलम,डायमंड या पन्ना रत्न धारण करें।

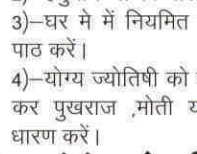

आपके लिए एक सफल वर्ष होने के योग हैं। भाग्य का आपको साथ मिलेगा, निवेश में लाभ होगा, जुआ,लॉटरी सट्टा इत्यादि से दूर रहें, प्रोपर्टी में आपको लाभ होगा, दोस्तो का सहयोग प्राप्त होगा, विदेश संबंधित कार्य में लाभ होगा।

आपको मेहनत अधिक करनी होगी, जिसके आपको सुखद परिणाम प्राप्त होंगें, कारोबार में अधिक व्यस्त रहने की वजह से आप घर परिवार में समय कम दे पाएंगे, यह आपको संतुलन बनाना होगा, वर्ना घर मे तनाव का वातावरण बन जायेगा। सगे संबंधियों से रिश्ते मधुर व मजबूत होंगे, प्रेमसंबंध मधुर रहेगें,पिता के सवास्थ्य का खयाल रखें। धैर्य व प्रेम से पारिवारिक समस्याओं का मिलबैठ कर समाधान करें। विदेश यात्रा का भी योग है, पार्टनरशिप में लाभ के योग है। पैतृक संपत्ति से लाभ होगा।

उपाय

1)–भगवान शिवजी का जलाभिषेक करें।
2)–हनुमान जी को चोला चढ़ाये।
3)–घर मे में नियमित रूप से पूजा पाठ करें।
4)–योग्य ज्योतिषी को कुंडली दिखा कर पुखराज ,मोती या मूंगा रत्न धारण करें।

कोरोना वैक्सीन में भारतीय वैज्ञानिकों की महान उपलब्धि : बवेजा

हर भारतीय को कोरोना से सुरक्षित करने की जिम्मवारी सरकार की हो और सरकार अपने खर्च पर वैक्सीन उपलब्ध करवाए

कुरुक्षेत्र। ग्लोबल इवेंट्स ऑर्गेनाइजेशन ट्रस्ट के चेयरमैन एडवोकेट मधु सूदन बवेजा ने कहाकि यह भारतीय वैज्ञानिकों की महान उपलब्धि है कि नए साल के प्रथम सप्ताह में ही भारत में स्वदेशी कोरोना वैक्सीन को मंजूरी मिल गई है। उन्होंने कहाकि वास्तव में नया साल अपने साथ एक बड़ी उपलब्धि लेकर आया है। भारत के वैज्ञानिकों ने एक नहीं दो–दो स्वदेशी कोविड वैक्सीन विकसित करने में सफलता पाई है। ऐसे में सरकार द्वारा भारत में दुनिया का सबसे बड़ा कोरोना वैक्सीन प्रोग्राम भी शुरू होने जा रहा है। इसके लिए पूरे देश को अपने वैज्ञानिकों के योगदान पर गर्व करना चाहिए। बवेजा ने इसी के साथ कहाकि अब सरकार को अपनी जनता के प्रति जिम्मेवारी को समझने का समय है। उन्होंने कहाकि हर भारतीय को कोरोना से सुरक्षित करने की जिम्मवारी सरकार की हो और सरकार अपने खर्च पर वैक्सीन उपलब्ध करवाए। अगर कोरोना वैक्सीन की कीमत निर्धारित की जाती है तो हर भारतीय के लिए वैक्सीन लगवाना शायद सम्भव न हो पाए। इसी के साथ बवेजा ने कहाकि भारत में प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों एवं विद्वानों की कमी नहीं है। देश हित में अगर वैज्ञानिकों को समय पर संसाधन उपलब्ध हों तो भारतीय वैज्ञानिक के समक्ष विश्व का कोई भी वैज्ञानिक ठीक नहीं सकता है। इस बात के अनेकों उदाहरण इतिहास में मौजूद हैं।

सभी पिहोवा व प्रदेशवासियो को
नववर्ष
मकर संक्रांति व लोहड़ी
की हार्दिक शुभकामनाएँ
Happy New Year 2021
सोहनपुरी समाजसेवी पिहोवा
अनीता सरपंच बोड़ा

सभी पिहोवा व प्रदेशवासियो को
नववर्ष
मकर संक्रांति व लोहड़ी
की हार्दिक शुभकामनाएँ
Happy New Year
नरेंद्र सिंह, सरपंच उस्मानपुर (पिहोवा)

सभी पिहोवा व प्रदेशवासियो को
नववर्ष
मकर संक्रांति व लोहड़ी
की हार्दिक शुभकामनाएँ
Happy New Year
मदन लाल समाजसेवी, हमीरा फार्म (पिहोवा)

सभी कुरुक्षेत्र व प्रदेशवासियो को
नववर्ष
मकर संक्रांति व लोहड़ी
की हार्दिक शुभकामनाएँ
Happy New Year 2021
महंत विशाल दास जी महाराज
श्री ठाकुर द्वारा प्राचीन तीर्थ श्री नाभि कमल मंदिर, कुरुक्षेत्र

हिंदी मासिकसमाचार पत्र बातों बातों में खबरे व विज्ञापन देने के लिए संपर्क करें ।
7015296154
हमारे साथ जुड़ने के लिए
batonbatonmein.com
facebook: baton baton mein....
(your city name)
watch on you tube:
baton baton mein

विरासत - लोक जीवन पनघट

हरियाणवी लोकजीवन में सांस्कृतिक परम्पराओं की विरासत पनघट

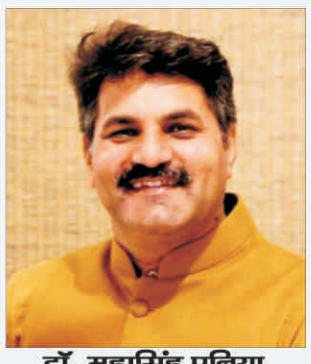

डॉ. महासिंह पूनिया
निदेशक, युवा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम विभाग

लोकजीवन में पनघट परम्परा लोक सांस्कृतिक विविधताओं को अपने अन्दर समेटे हुए है। संभवत: कूंआं खोदने की शुरूआत मानवीय जिज्ञासाओं का वह स्वरूप है जिसने आगे चलकर लोक परम्पराओं का रूप धारण कर लिया। मानव बहती जल धारा, सरोवर, तालाब आदि के जल से अपनी प्यास बुझाता रहा है। उसे कच्ची बावड़ी भी उपलब्ध होती रही हैं, किंतु जीवनयापन की आवश्यक जरूरतों को बढ़ते उसे ऐसे स्थानों पर भी बसना पड़ा, जहां प्राकृतिक जल स्त्रोतों का अभाव था और गरम मौसम की मार की।

इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए उसने कच्चे कुएं खोदे। इस काम में उसे रेतीली, कठोर पथरीली भूमि से दो–दो हाथ करने पड़े। कच्चे कुएं या झेरे का स्थान ढेंकली ने लिया। इसमें वह बिना नीचे उतरे मिट्टी के बरुए या घड़े से पानी खींच सकता था। इससे वह अपनी खेती की सिंचाई भी करता था। दोलाया, पोलाया कुआं, चरस का कुआं रेंहट का कुआं इसी का विकास है। हरियाणवीं लोकजीवन में कुएं से जुड़ी हुई परम्पराएं वस्तुत: वैदिक कालीन संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। वेदों में अनेक स्थलों पर कुएं को कूप, कर्त, कातु, खात, काट, आवट, वब्र, केवट, उत्स, कारोतर, क्रिवि, सूद, ऋश्पद, कुशय आदि नाम मिलते हैं। देहात में कूंआं खोदते समय शनैरू शनैरू गोलाकार पक्के कुएं बनाने के कौशल का विकास हुआ। एक क्रम तो यह था कि कुएं की 15–2० हाथ ऊंची कोठी जमीन पर खड़ी की जाती थी और उसके अंदर घुस कर मिट्टी खोदकर खिसका कर उस कोठी को शनैरू शनैरू सावधानी पूर्वक नीचे धंसाया जाता था।

दूसरा तरीका या पहले गोलाकार रूप में पानी मिलने के स्तर तक मिट्टी खोद ली जाती थी और फिर उसके चारों ओर पक्की ईंटों की चिनाई की जाती थी। दोनों ही काम जोखिम भरे थे। मुंडेर के पक्के कुआं का यह लाभ हुआ कि उसमें बरसात और खेतों का गंदा पानी नहीं जा सकता था। इस कुएं से बारहों महीने पानी मिला सकता था। पानी लाने का काम महिलाएं करती थी। ये अपने सिर पर बंटा, टोकणी, दोघड़, तेछड़ में पानी लाती। पीने के पानी के इस स्थाई घर का नाम पनघट का कुंआ पड़ा। शनैरू शनैरू दानशील व्यक्तियों ने कुएं खुदवाए। इनके चारों तरफ ऊंचा चबूतरा या मनखंडा बनवाया जहां महिलाएं अपने बंटे टोकणी, डोलू, नेज्जू, बाल्टी आदि रख सकें। इस प्रकार, कूएं के एक, दो या चारों तरफ पैडियां भी लगने लगीं। कईं स्थानों पर पानी की गहराई 5०–6० हाथ तक थी। इससे पानी खींचने के लिए लकड़ी की फड़ें उठाकर उन पर चक्री, चकली या घिरणी लगाई गईं। चकली पर नेज्जू या रस्सी चढ़ाकर डोल से पानी खींचना आसान हो गया। कहीं–कहीं इस काम में बैलों द्वारा रस्सी खींचने की कला जुड़ी। कुएं की सुंदरता को बढ़ाने के लिए इसके चारों ओर बेल बूंटे चीते जाने लगे। इसके चारों ओर बुर्जी या मंदिरनुमा मरवे चिनवाए गए। इसे मरवों वाले पनघट के कुआं नाम दिया गया। कुएं में सुरक्षा की दृष्टि से इस पर खटखड़ रखवाया जाने लगा। इसके खाकें या चौकोर चौखटों से केवल बाल्टी अंदर–बाहर आ जा सकती थी। पनिहारिण का पैर गीलेपन या कीचड़ से खिसके तो वह स्वयं गिरने से बच सकती थी। बिना खटखड़ के कुएं में यदि किसी कारण कोई फिसल भी जाए, तो नीचे पानी के सतह से कोई एक फुट ऊपर कड़े या कड़ेदार जंजीरे लटका दी जाती थीं, ताकि उन्हें पकड़ कर डूबने से बचा जा सके। हरियाणा में पनघट के कुएं की एक संस्कृति का विकास हुआ।हरियाणवी लोकजीवन एवं पनघट का परस्पर गहरा नाता है।

मेरा डोल कुंए मैं लटके सै, मेरी पोरी–पोरी मटकै सै। मेरा झिलमिल करै सरीर, परे सी नै हो ले नै जैसे गीत भी कुंए की ही प्रासंगिकता को उजागर करते हैं।

लोकजीवन में पीने के पानी के घाट अथवा स्थान को पनघट की संज्ञा प्रदान की गई है। देहात में जहां से महिलाएं पीने का पानी भरती रही हैं, उसे पनघट अथवा पाणी पीणे का कुआं कहा जाता है। पनघट पानी भरने का स्थान ही नहीं, अपितु सांस्कृतिक तथा वैचारिक आदान–प्रदान का मूल केन्द्र भी रहा है। आरम्भ में मानव ने पानी की आवश्यकता की पूर्ति के लिए कच्चे कुएं खोदे, जिनसे वह अपनी खेती की सिंचाई भी करता था। दोलाया कुआं, पोलाया कुआं, चड़स का कुआं, रहट का कुआं, पाणी का कुआं इसी का विकास है। शनैः शनैः गोलाकार पक्के कुएं बनाने के कौशल का विकास हुआ। हरियाणवीं लोगों ने जिस प्रकार से अपनी परम्परागत जल विरासत को संजोया है, वह हमारे सांस्कृतिक स्वरूप से समृद्ध होने के साथ–साथ हमारी परम्परारिक वैज्ञानिक सोच का परिचायक है। लोकजीवन की यह परम्परा आर्थिक मानदण्डों पर सस्ती, दीर्घजीवी तथा कलात्मक दृष्टि से सुदृढ़ एवं गुणों के भण्डार से लबालब है।

हरियाणा प्रदेश में पनघट से जनमानस का सम्बन्ध सदियों से चला आ रहा है। यदि ये कहा जाए कि कुएं एवं पनघट हरियाणवीं सांस्कृतिक आभा के प्रतीक हैं, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस प्रदेश की लोक सांस्कृतिक छटा का अद्भुत संगम कुएं से जुड़ा हुआ है, कुएं के बिना अवलोकन के हरियाणा प्रदेश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की परिकल्पना नहीं की जा सकती। लोकजीवन में कुआं एक ऐसा ही माध्यम है, जहां हरियाणवी अल्हड़ युवतियां एवं महिलाएं पानी भरने के लिए एकत्रित होती रही हैं। देहात में हरियाणवी महिलाओं की दिनचर्या की शुरुआत कुएं से पानी लाने से ही होती है। कुआं सदैव से ही हरियाणवीं महिलाओं की सूक्ष्म मानवीय अनुभूतियों की अभिव्यक्तियों का सशक्त माध्यम रहा है। हरियाणवीं लोकजीवन में संवाहित अनेक लोकसांस्कृतिक परम्पराओं का कुआं ही एक ऐसा माध्यम था, जहां महिलाएं–मुंह दिखाई, तील दिखाई, पांव–दबाई, ब्याह–सगाई, लणिहार, लडकी की बिदाई, दुस्सर, तीस्सर, दस्सुटण, सीद्धा, कोथली, सिंधारा, छुछक, होली, फाग्गण की मस्ती, सास की चुगली, देवर के लाड, जेठ की अठखेली, ससुर की खंगार, घरआले की मार, फौगण का पिया के प्रति प्यार, नई–नवेली बहू का सौल्ह सिंगार, कड़ी छलकड़ों झाझणों रमझौलों की झलकार, गांव–गुहांड में होने वाली घटनाओं के अम्बार पर परस्पर चर्चा किया करती थीं।

कुआं ग्रामीण जीवन में सूचना का ऐसा केन्द्र रहा है, जहां पर सभी समुदायों की महिलाएं परस्पर अपना लोक सांस्कृतिक तथा वैचारिक आदान–प्रदान करती रही हैं।हरियाणवीं लोकजीवन में कुएं अलग–अलग दृष्टि से जाने जाते हैं, जिस कुएं में ईंट न लगी हों, उसे कच्चे कुएं के नाम से जाना जाता है, जिस कुएं का निर्माण लखौरी ईंटों से हुआ हो और उसके ऊपर मुंडेर तथा मण बणी हुई हो, तो उसे मण वाले कुएं के नाम से भी जाना जाता है। रहट तथा सिंचाई के लिए अलग कुएं का निर्माण किया जाता है। धर्मशाला आदि में पानी की व्यवस्था के लिए बनाए गए कुएं का आकार रहट वाले कुएं से छोटा होता है। रास्तों पर राहगिरों के पानी पीने के लिए बनाए गए छोटे कुएं को कुईं के नाम से जाना जाता है।

बड़े–बुजुर्ग पहले जब भैंसे चराते थे, तो अपनी इक्कीस मीटर की पगड़ी सिर पर इसलिए बांधते थे, ताकि खेतों तथा जंगलों में बने कुओं से बाल्टी से पानी खींचने के लिए अपनी पगड़ी का प्रयोग कर सकें। इतना ही नहीं, खेतों के आधार पर भी कुएं का नामकरण होता है, जैसे –डैरण वाला कुआं, जंगल वाला कुआं, नदी पार कुआं, जमना पार कुआं। इतना ही नहीं, व्यक्ति विशेष, गांव,

पाना, जाति, समुदाय आदि के नामों पर भी कुएं की विशेष पहचान हरियाणवीं संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हरियाणवीं लोकजीवन में कुआं मूलतरू पणिहारणों का ही केन्द्रबिन्दु रहा है। हालांकि पुरुष भी कुएं से पानी भरते रहे हैं, लेकिन समाज में पनघट पर महिलाओं का ही आधिपत्य रहा है, हालांकि कुएं को खोदने तथा झाम से उसकी सफाई का काम पुरुष वर्ग ही करता है। ग्रामीण लोकजीवन में कुएं को जल देवता के रूप में स्वीकार किया जाता है। यही कारण है कि कुएं को खोदने से पहले दादा (पंडित) से पत्तरा निकलवाया जाता है, उसके पश्चात् बड़े–बुजुर्ग जो धरती के अंदर की पानी के बहाव के विशेषज्ञ के रूप से परम्परागत ज्ञान हासिल किए होते हैं (छठी शदी के शुरु में वाराह मिहिर ने बृहत् संहिता ग्रंथ में पाणी की महत्ता को लेकर सौ से अधिक श्लोकों की रचना की है, जो पानी से जुड़े हुए रहस्यों को समाए हुए हैं और परम्परागत रूप से लोक सांस्कृतिक वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरे उतरते हैं, जो आज हरियाणवीं लोक–कहावतों एवं गीतों का हिस्सा भी हैं।), उनसे सलाह–मशवरा किया जाता है, उसके पश्चात् लोकदेवता की स्थापना होती है और फिर कुएं की निशानदेही की जाती है। निशान देही के पश्चात् चन्दे की उगाही का काम भी जोर–शोर से चलाया जाता है। अनेक गांवों में तो कुएं के निर्माण हेतु धन एकत्रित करने के लिए सांग आदि के आयोजन भी निरंतर होते रहे हैं, जिसमें सभी समुदायों के लोग बढ़–चढकर हिस्सा लेते हैं। कुएं को खोदने के लिए कस्सीयों तथा खुदालों का प्रयोग किया जाता है। मिट्टी को निकालने के लिए बोरियों, झोलियों, झामों तथा चड़स का प्रयोग किया जाता है। चौवा आने पर प्रसाद आदि बांटने की परम्परा भी हमारी संस्कृति का हिस्सा है। सामुदायिक दृष्टि से लखौरी ईंटों से कुएं को पक्का किया जाता है।

उसकी मुंडेर बनाई जाती है, उसकी चारों बुर्जियों का निर्माण किया जाता है, मण तथा पाड़छा कुएं का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, क्योंकि मण कुएं की आड्डर होती है तथा पाड़छा कुएं का पतराल।इसके साथ ही अनेक कुओं पर स्नानघाटों तथा छत्तरियां भी बनाई जाती हैं, ताकि कुएं पर महिलाएं एकांत में स्नान कर सकें और छत्तरियों से पानी की स्वच्छता विद्यमान रहे। हरियाणा में कुओं में मकान बनाने की परम्परा तथा कुओं से घरों तथा स्वच्छ पानी की नालियां व कुओं के साथ पशुओं के लिए खेल आदि बनाने की परम्परा भी रही है, ताकि जन–मानस एवं पशु–पक्षी नैसर्गिक जल का आनन्द ले सकें। लेखक ने जगाधरी के बुढिया गांव में स्वयं एक ऐसे कुएं का अवलोकन किया है, जिसमें एक कमरे का निर्माण हुआ है।

मान्यता थी कि गर्मी के दिनों में गांव का जो भी मेहमान आता था, उसके रहने की व्यवस्था कुएं वाले कमरे में होती थी, क्योंकि गर्मी के दिनों में यह कमरा अत्यंत ठण्डा रहता था। इस कमरे की सीढियां कुएं से ही नीचे उतरती थी। कुएं पर लगने वाले गोलाकार भूण, जिनके ऊपर से रस्सी, नेज्जू तथा लाह् खींचने का काम किया जाता था, उनका निर्माण झाण्डी, डाक तथा कीकर की लकडियों से किया जाता रहा है। जिन कुओं में लोहे के मोटे बेलणनुमा सरिये लगे होते हैं, जिनको बेलणी के नाम से जाना जाता है, उनके ऊपर लोहे की घिरणियां लगी होती हैं, जो डेगचून की बनी होती हैं। इन्हीं के ऊपर से रस्सियां डालकर लोग पानी खींचने का काम करते हैं। कईं बार कुएं में जब कोई वस्तु गिर जाती है, तो उसे निकालने के लिए कांटे तथा बिलाई का प्रयोग भी अकसर किया जाता है। बहुत से व्यक्ति कुएं से सामान निकालने में अत्यंत दक्ष होते हैं, इससे समाज में उनकी विशेष पहचान भी बनी रहती है। चूने तथा लखौरी ईंटों से बनने वाले कुएं के ऊपर लोकसांस्कृतिक चित्रों की झलक भी देखने को मिलती है। देवी–देवताओं के चित्रों के अतिरिक्त अनेक सामाजिक एवं पौराणिक घटनाओं के भित्ति–चित्र कुएं की लोक सांस्कृतिक छटा को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। हरियाणवी लोकसाहित्य एवं कुंए का परस्पर गहरा नाता है। आज भी देहात में कुएं से सम्बन्धित असंख्य ऐसी कहानियां, लोककथाएं, पहेलियां, मुहावरे तथा घटनाएं आज भी हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जिनका केन्द्र बिन्दु कुआं है।

कुआं पूजणां, कुएं मैं पड़णा, कुएं धोरै चक्कर काटणां, आग्गै कुआं पाछां खाई, कुआं बेगाणां, कुएं का ब्याह, कुएं झेरे मैं पड़णा असंख्य ऐसे मुहावरें हैं, जो आज भी जनमानस की जुबां का हिस्सा हैं। इतना ही नहीं, बांध भरोट्टा नीर का, दे पाथर का जूण, बांधण आला बांधग्या, खोल्लण आला कौण, जैसी जकड़ी का भी उत्तर कुआं ही है। इतना ही नहीं, पणघट जात्तै, पण घटै यही कहै सब कोय, पणघट जा नहीं पण घटै जो घट मैं पण होय, जैसी रहस्यवादी कहावतें भी कुएं से जुड़ी हुई हैं। इतना ही नहीं, हरियाणवीं लोकजीवन में मान्यता है कि आदमी को आदमी तो फिर मिल जाता है, पर कुएं को कुआं नहीं मिलता, कहा भी गया है – गया गांव जहां चौधरी हंस्या, गया रूख जहां बुगला बस्या, गया ताल जहां उपजी काई, गया कुआं जहां भई हथाई अर्थात् जिस गांव का मुखिया मजाकिया हो, जिस पेड़ पर बगुला बैठने लगे, जिस जोहड़ में काई लग जाए और जिस कुएं की तली बैठ जाए, तो उक्त सभी चीजें नष्ट हो जाती हैं।

लोकजीवन में हरियाणवी महिलाएं गीतों के माध्यम से अपनी मनोभावनाओं को उजागर करती हुई सहज ही गाती हुई देखी जा सकती हैं कि मेरा डोल कुएं मैं लटकै सै, मेरी पोरी–पोरी मटकै सै, मेरा झिलमिल करै शरीर, परै सी ना होल्लै नै। इतना ही नहीं, हरियाणवीं लोक संस्कृति में हमारी रस्मों–रिवाजों, परम्पराओं से कुएं का परस्पर गहरा नाता है। गांव में स्त्रियां छोरों के जन्म के समय ग्यारह, इक्कीस अथवा चालीस दिन पूरे करने के पश्चात् कुआं पूजने की परम्परा आज भी लोकसमाज में विद्यमान है। इस अवसर पर सामूहिक रूप से महिलाएं जग्गा को कुएं पर जल–पूजने के लिए ले जाती हुई अकसर यह गीत गाती हैं – ससुर मैं कुएं पै जल पूज्जण जाऊंगी, लहंगा पहन ओढूं सिर पै चून्दड़ी, करकै सौल्ह सिंगार, जल पूज्जण जाऊंगी। इतना ही नहीं, मेरे सिर पै बंटा टोकणी, मेरे हाथ मैं नेज्जू डोल, मैं पतली सी कामणी, कुएं पै नीर भरैं थी, दयानन्द नै घोड़ा डाट्या ए, पिया मैं कुएं तै पाणी खींचूं मेरे गात मैं झटकै लाग्गै, मेरा पतली कमर बल खावै ओ, आदि गीतों में कुएं की संस्कृति की साक्षात् अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। इतना ही नहीं, कंध का दाम्मण, लाल चून्दड़ी, धौली कुरती, मडकण घाली जूत्ती तथा कड़ी छल कड़ों न्यौरी पात्ती व रमझौल की झरण–झरण के साथ जब नई नवेली दूल्हन कुएं पर पाणी भरने के लिए निकलती है, तो अल्हड़ युवा भी अपनी भावनाओं को रोक नहीं पाते उनकी प्रतिक्रियाओं को देख नई नवेली दूल्हन भी इस गीत के माध्यम से कुछ यूं कह उठती है कि मेरा कंध का दाम्मण लाल चून्दड़ी जाले की, छोर्या नां मारी किलकारी, बहू रै आई काले की, मैं कुएं तै पाणी ल्याई, छोर्या नैं बोली मारी, बहू रै या काले की। हरियाणवी लोकजीवन में पनघट पर ग्रामीण महिलाओं द्वारा बात–बातों में अपने सुख–दुख को बांटने की परम्परा रही है। पनघट पर सभी महिलाओं को सभी की आगे पीछे की रिश्तेदारियों का पता लग जाता था। नई वधु और अन्य युवतियों को साज–सिंगार कर गीत गाते हुए पनघट के कुएं तक जाने का मौका मिला जाता था। आपसी मखौल और हंसी ठट्ठों में घरेलू माहौल का बदलाव हो जाता था। जच्चा लडका होने पर गीत गाने कुएं का पूजन जाती थी। ये दीवाली के अवसर पर कुएं की जगत पर दीपक जलाती थी। कहीं कोई महिला सहेली का बंटा टोकना उठवाने में हाथ बंटवा रही हैं, तो कोई पैडियों से ही आंगतुकों का स्वागत कर रही है। महिलाएं घर में चाहे किसी भी तरह के कपड़े क्यों न पहनती हो, किन्तु पनघट पर जाते समय अच्छी तरह श्रृंगार करके जाती हैं। पहले तो नई–नवेली दुल्हनें घाघरा पहन, सितारों व घोटों से युक्त चुनड़ी ओढ़, पैरों में कढ़ाई की हुई डिजाइनदार जूतियां व उपर से नीचे तक सोने–चांदी के गहनों से सज–धज कर पास–पड़ौस की आठ–दस या इससे भी अधिक एकत्रित होकर गीत गाती हुई पानी लेने जाती रही हैं। सास की पीड़ा भी गीतों में देखने को मिलती है जैसे–

खिल रहा चांद लटक रहे तारे, चल चन्द्रवाल पाणी
सासड़ की जाई मेरी नणंद हठीली रात ने खन्दा दई पाणी।

महिलाओं द्वारा गए पनघट के गीतों में पनघट की विभिन्न स्थितियों का समस्त चित्रण किया गया है। नव नवेली दुल्हन जब सिर पर दोघड़ रखकर पानी लाती थी तो कई बार उसे बड़ी मुश्किल होती थी। वह थक कर कह देती थी–

मेरी नाजुक नरम कलाई रे, पणियां कैसे जाऊं?
अपने सुसर की मैं ऐसी लाड़ली,
आंगन में कुई खुदवाई रे, पणिया कैसे जाऊं?

प्रेम प्रसंग भी पनघटों से खूब जुड़े हैं। जब टोली में न जाकर कोई पणिहारिन अकेली पानी लेने चलती है तो रास्ते में खड़े गाभरू से प्रेम प्रसंग शुरू हो जाता है। इसका वर्णन गीत में इस प्रकार मुखरित हुआ है–

रसीले नैन गोरी के रे, चली एक नार पानी को रे,
मिला एक छैल गाभरू सा रे, ''किसे तुम देख मचले हो रे,
किसे तुम देख अटके हो रहे,''
''सूरत तेरी देख मचला हूं री जोबन तेरी देख अटका हूं री।''

वर्तमान दौर में कुएं पर रमझौलों की रणक–झणक, अल्हड़ युवतियों की थिरकन तथा मसटण्डों की अटखेलियां अतीत का हिस्सा बन गई हैं। कुआं अपने अतीत के स्वर्ण युग को देखकर गौरवान्वित तो महसूस करता होगा, किंतु वर्तमान पर भी आंसू बहाने से अपने आपको रोक नहीं पाता होगा, क्योंकि आधुनिकता की चकाचौंध ने उसकी सांस्कृतिक परम्परा को ध्वसं करने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी है। आज हरियाणा में जिन कुओं पर कभी महिलाओं के मेले लगते थे। आज उनकी दासतां को खण्ड हर ही ब्यां कर रहे हैं। कुएं की महत्ता को वही व्यक्ति समझ एवं आत्मसात् कर सकता है, जिसने कुएं के जीवन को जीया है। कहना न होगा कि आने वाली पीढियों को जब कुएं के मेंढक के मुहावरों का बखान करना पड़ेगा तो उनको कुओं के चित्र दिखाकर ही काम चलाना पड़ेगा।

शिक्षा-दीक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा की ऊँची उड़ान

डॉ राकेश सिंह
शिक्षाविद्

परिचय *27 वर्षों तक शिक्षा विभाग, दिल्ली में विभिन्न पदों से सम्बन्धित रहे। आजकल स्वेच्छिक सेवा निर्वृति के बाद शिक्षा के विकासात्मक पक्ष से जुड़े हैं। वह मंजरी फाउंडेशन के साथ लर्निंग लैब और महिला संसाधन संवर्धन जैसे चर्चित शैक्षिक एवं जेंडर संवेदनशीलता संवर्धन कार्यक्रमों से सम्बद्ध हैं। बच्चों की शिक्षा के साथ-साथ महिलाओं की शिक्षा के लिए वह भारत में यू.एन. वीमेन के कार्यक्रमों में भी विषय विशेषज्ञ (शिक्षा)-सलाहकार की भूमिका निभा रहें हैं। कई राष्ट्रीय-राजकीय सम्मान प्राप्ति के साथ आपने शिक्षा-विषय पर महत्वपूर्ण लेखन किया है। कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों तथा प्रतिष्ठानों के लिए शिक्षा सम्बन्धी वर्कशाप, पुस्तकें एवं पाठ्य पुस्तकों के लिए आपका कार्य इसी श्रेणी में रखा जा सकता है।*

21वीं सदी की बदलती आवश्यकताओं को देखते हुए उच्च शिक्षा का गुणवत्तापूर्ण और रचनात्मक होना बहुत जरूरी है। भारतीय शिक्षा समुदाय का उद्देश्य चिंतनशील, बहुमुखी प्रतिभा संपन्न, सौहार्द-सामंजस्य पूर्ण, रचनात्मक-जिज्ञासा पूर्णव्यक्तित्व का विकास होना चाहिए। हमें भावना रहित या संवेदना शून्य डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, प्रशासक की फौज तैयार नहीं करनी है। उच्च शिक्षा के सभी अंग जैसे-विज्ञान, सामाजिकी, मानविकी, कलाएं, भाषाएं, व्यावसायिक और तकनीकी कौशल शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में ज्ञान, रचनात्मकता, सार्वजनिक-सहभागिता और समाज के प्रति उपादेयता के लिए छात्रों को तैयार करना पड़ेगा। कोरोना संकट ने कई तरह के मूल्यों और परिस्थितियों को जन्म दिया है हमें मनोवैज्ञानिक स्तर पर मजबूत, सार्थक और संतोष पूर्ण जीवन जीने वाले छात्रों को प्रशिक्षित करना है। आधुनिक जीवन में आर्थिक चिंतन के बिना यह सब संभव ही नहीं है।

भारत में उच्च शिक्षा की आज जो स्थिति है। इसके लिए बहुत सारी परिस्थितियां जिम्मेदार हैं, जिनसे हमें अब बचना होगा, जैसे-सीखने के उद्देश्यों और परिणामों पर बल देना होगा। उच्च शिक्षा में कठोर विभाजन को कम करके विद्यार्थियों को संकीर्ण पाठ्यचर्या से बाहर निकालना होगा। समाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में स्थापित महाविद्यालयों के स्थापित होने के आधार को भी उच्च शिक्षा के चिंतन से जोड़ना होगा। हमें अध्ययन करना होगा कि दूरदराज के क्षेत्रों में गरिमा पूर्ण और उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संस्थान खोलकर क्षेत्र की शैक्षिक संस्कृति को कैसे बदल सकते हैं?

हम अध्ययन कर सकते हैं कि आई. आई. टी.जैसे शिक्षा संस्थान खुलने के बाद उनके आसपास का शैक्षिक और सामाजिक वातावरण किस तरह सकारात्मक रूप से परिवर्तित हुआ? हमें उच्च शैक्षिक संस्थानों की संस्थागत और शैक्षिक स्वायत्तता का ध्यान रखना होगा। शिक्षा संस्थानों कीजिम्मेदारी शिक्षा से जुड़े नेतृत्व के हवाले करनी होगी। प्रशासनिक चंगुलों से विश्वविद्यालयों को बाहर निकालना होगा ,जिससे उनका वातावरण सिर्फ और सिर्फ शैक्षिक अनुशासन के इर्द-गिर्द रहे। नवाचार, नई सोच और रिस्क लेने को तैयार नेतृत्व को हमेंउच्चतर शिक्षा में लाने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। जिससे विश्व विद्यालय नए-नए शोध, नवाचारों और विचारों का केंद्र बन सके। आज उच्च शिक्षण संस्थानों में कुलपति की जो प्रणाली चल रही है उस पर भी विचार करने की आवश्यकता है। हमें शिखर स्तर पर गवर्नेस और नेतृत्व की क्षमताओं को शिक्षा संस्थानों के अनुरूप लाना होगा। आज के दौर में उच्च शिक्षा का अंतराष्ट्रीय करण भी एक जरूरी प्रश्न है। अंतराष्ट्रीयकरण बातें आती हैं दृपहली भारतीय विश्व विद्यालयों का विदेशी भूमि पर अपने परिसर खोल कर दूसरी विदेशी विश्व विद्यालयों को भारतीय में अपने परिसर खोलने की अनुमति देकर।

शिक्षा के अंतराष्ट्रीय करण की बात करने के लिए जरूरी है कि हमारा पाठ्यक्रम आकर्षक, प्रभावी और प्रासंगिक हो। जिसमें लगातार रचनात्मक मूल्यांकन करते रहने की जगह हो और सभी शैक्षिक क्रियाओं में छात्रों का सक्रिय सहयोग लेने की इच्छा शक्ति और क्षमता हो। जिसके आधार पर ज्ञान की नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप सीखने के प्रतिफलों(लर्निंग आउटकम)को प्राप्तकिया जा सकते हो। हमारी शिक्षा प्रणाली में अभी तक सीखे हुए को आंकलन में लाने का तरीका पूरी तरह विवेक पूर्ण नहीं है। जिसके कारण अक्सर छात्रों की मनोदशा प्रभावित होती है। अनुभव बताता है कि कई बार सीखने में संतुष्ट छात्रों का परिणाम उनके सीखने की क्षमताओं के अनुरूप(ग्रेडिग या अंक) नहीं आता। सीखने का आकलन से ऐसा संबध बने कि छात्रों की संतुष्टि स्तर बढ़े। सीखने का संबंध सिर्फ किताबी ज्ञान से नहीं लगाया जा सकता शारीरिक मजबूती, बेहतर नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पण और मनो-सामाजिक धरातल पर भी सीखने का परिणाम दिखाई देना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पूरी ईमानदारी से यह स्वीकार करने में नहीं हिचकती कि सभी संस्थानों और कार्यक्रमों का मुक्त दूरस्थ शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा और पारंपरिक कक्षा-कक्ष के बिना काम चलने वाला नहीं। यदि हम सभी प्रणालियों को सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में जगह देना चाहते हैं तो हमें नवाचार और लचीलापन लाना होगा। उच्च शिक्षण संस्थानों को एक मानक क्रेडिट ग्रेडिंग प्रणाली को स्वीकार करना होगा। जिसमें किसी भी उच्च शिक्षा संस्थान को क्रेडिट हो सकन वाली मानकीकृत आंकलन प्रणाली हो। इस सबके लिए जरूरत है कि एक गुणवत्ता पूर्ण संस्थान की जो विनियमन, मानकीकरण, विकास मान्यता, और दिशानिर्देश तैयार करने में सक्षम हो।

ज्ञान प्रमुख राष्ट्र के रूप में भारत एक ऐसा देश बने जहां अंतरराष्ट्रीय छात्र बड़ी तादाद में पढ़ने तथा शोध करने आयें। यदि अंतर राष्ट्रीय छात्रों के लिए भारत में शोध संभावना लानी है तो हमें ज्ञान क`विभिन्न पक्षों की ओर देखना होगा. इंडोलॉजी, आयुष-चिकित्सा, योग, कलासंगीत, इतिहास, भारतीय भाषा एवं संस्कृति विषयों के साथ विज्ञान के नये नये क्षेत्रों की ओर कदम बढ़ाने होंगे। हमें अपनी प्राथमिकताएं और सीमाएं दोनों पता है इसलिए हमें अच्छी तरह स्पष्टता होनी चाहिए कि हम विदेशी छात्रों को किन विषयों में आकर्षित कर सकते हैं और हम विदेशी शिक्षा संस्थानों से क्या सीख सकते हैं?

भारतीय विश्व विद्यालयों के परिसरों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार विकसित करना होगा। जहां बिना किसी भेदभाव के लोकतांत्रिक वातावरण में शिक्षा उपलब्ध हो। भारत में आज भी जाति के साथ रंगभेद की चेतना के बीच मौजूद हैं। हमें इस पर भी गहराई से विचार करना होगा कि विदेशी संस्कृति में पला- बढ़ा एक छात्र जब भारत की भूमि पर आएगा तो उसे कैसा महसूस करना चाहिए? यदि अंतरराष्ट्रीय करण की पहलसे पूर्व हम अपने विश्व विद्यालयों को स्तरीय न बना पाए तो इस अच्छी पहल के दुष्परिणाम भी सामने आ सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय करण हमारे देश के योग्य और प्रबुद्ध वर्ग को विदेशी विश्व विद्यालय की ओर आकर्षित करने का एकतरफा प्लेटफॉर्म भी बनकर रह सकता है।

पहले से ही विदेशी संस्थान हमारे देश के बड़े संस्थानों से निकले हुए योग्य और प्रशिक्षित छात्रों को स्कॉलरशिप, फ्रीशिप और नौकरी का लालच देकर अपनी ओर आकर्षित करते रहे हैं। अगर अंतर राष्ट्रीय करण बिना सोचे समझे हुआ और हमारे परिसर उसके लिए मन से तैयार नहीं हुए तो इसका एक देश के रूप में भारत को फायदा होने की वजह नुकसान भी हो सकता है।यद्यपि यह शिक्षा नीति कहती है कि हम उच्च प्रदर्शन करने वाले भारतीय विश्वविद्यालयों को भी अन्य देशों में परिसर सीापित करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। दुनिया के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों को हीभारत मेंअपने परिसर स्थापित करने की सुविधा देंगे। इसके लिए एक अंतरराष्ट्रीय छात्र कार्यालय स्थापित करने की बात भी की गई है। इन सभी के लिए एक वैधानिक फ्रेम वर्क विकसित करने तथा नियमों, शासन और मानदंडों के स्तर पर भी कुछ उदारता बरतने की बात भी शिक्षा नीति करती है। इस सबके बीच यह सवाल खड़ा होता है कि क्या यह उदारता विदेशी विश्वविद्यालयों को स्थापित करने के लिए ही प्रदान की जाएगी या भारतीय विश्वविद्यालयों को विदेश में परिसर खोलने के लिए भी होगी?

इस सवाल के पीछे एक कारण है कि यदि यह उदारता विदेशी विश्वविद्यालयों तक ही सीमित रही तो भारतीय शहर विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए कमाने का अच्छा साधन बन जायेंगे। इससे भारतीय विश्वविद्यालयों को अपने पैरों पर खड़ा होने में परेशानी होगी। विदेशी विश्व विद्यालयों की अपनी स्वायत्त आर्थिकसत्ता है। जिसके आधार पर वे अपना शैक्षिक आधारभूत ढांचा विकसित करते हैं। जबकि भारतीय विश्वविद्यालय आज भी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए सरकार का मुंह देखते हैं। ऐसे में विश्वविद्यालयों की प्रतिस्पर्धा के बीच भारतीय विश्वविद्यालय अपनी चमक हो सकते हैं। यह भी परिणाम हो सकता है कि आर्थिक रूप से विपन्न और अधिक पैसा न खर्च करने वाले विद्यार्थियों की पहली पसंद ही भारतीय विश्वविद्यालय न बन कर रह जाएँ। इससे अलग जो वर्ग शिक्षा पर मोटा पैसा खर्च कर सकता है-वह विदेशी विश्वविद्यालयों की नामी डिग्री की ओर दौड़ लगाये।

भारत में हम देख रहे हैं कि शिक्षा में औद्योगिक घरानों की रुचि ज्ञान पर एक नए तरह के कब्जे के रूप में सामने आई है। कुछ उच्च श्रेणी के बड़े निजी विश्वविद्यालयों ने अपना रंग-रूप दिखाना प्रारंभ भी कर दिया हैं।

हम जानते हैं कि आज वैश्वीकरण के इस दौर में हम दुनिया के लिए किसी भी देश का रास्ता बंद नहीं कर सकते। यदि हम सतर्कता बरतने को तैयार और गंभीर हैं तो इस अंतर राष्ट्रीय करण से नये ज्ञान संचालन करने के अनुभवों को सीखने का मौका भी मिलेगा। उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए जीवंत परिसरों की आवश्यकता होती है। जीवंत कैंपस छात्रों को शिक्षा की नीरसता से आगे ले जा सकने में प्रेरित करते हैं। हमें इस ओर भी सोचना होगा।राष्ट्रीय शिक्षा नीति जिन बहु-विषयक संस्थानों के रूप में इन उच्च शिक्षा संस्थानों को देखना चाहती है,उसके स्वरूप बदलने का लक्ष्य 2030 तक का रखा है। ये सभी संस्थान समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर ले जाने वाले होंगे। इसके अतंर्गत विभिन्न कलाओं के अतिरिक्त मानविकी, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व्यावसायिक, तकनीकी तथा व्यवहारिक कौशल(सॉफ्ट स्किल्स) जैसे विषयों को रखने तथा विकसित करने की योजना है। शिक्षा नीति का लक्ष्य है कि वह"इंसानी सृजन के सभी क्षेत्रों को कलाओं के रूप में" देखे। विभिन्न प्रकार की कलाओं के ज्ञान के इस विचार की शिक्षा को आजकल 'लिबरल आर्ट' यानि कलाओं के प्रति एक उदार नजरिया कहा जाता है। नई शिक्षा नीति इस ओर बढ़ने का संकेत करती है।

नई शिक्षा नीति में एक और बात कही गई है। एकेडमिक क्रेडिट बैंक स्थापना की अर्थात इस शिक्षा नीति के लागू होने के साथ स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर चयनित विषयों और क्षेत्रों की सफलता आधार पर विद्यार्थियों को क्रेडिट मिलेंगे। जिसके आधार पर उनको डिग्री दी जाएगी। स्नातक उपाधि की संरचना को बदलने की भी बात कही गई है।

स्नातक उपाधि का स्वरूप दो तरह का होगा तीन वर्षीय और चार वर्षीय। तीन वर्षीय पाठ्यक्रम में भी व्यावसायिक तथा पेशेवर क्षेत्रों सहित अन्य विषयों में एक साल पूरा होने पर सर्टिफिकेट, दोसाल पूरा होने पर डिप्लोमा और तीन साल पूरा होने पर स्नातक की डिग्री दी जाएगी। यदि कोई विद्यार्थी उससे आगे बहु-विषयक प्रोग्राम या शोध-क्षेत्र का चयन करता है तो वह चार वर्षीय यानि एक और वर्ष के साथ स्नातक कर सकता है। तीन वर्ष के पाठ्यक्रम के बाद दो वर्ष की मास्टर डिग्री होगी तथा चारवर्ष के पाठ्यक्रम के बाद एक वर्ष की मास्टर डिग्री होगी। यदि चार वर्षीय पाठ्यक्रम में छात्र उच्च शिक्षण संस्थान द्वारा तय किए गए अध्ययन के प्रमुख क्षेत्रों में यदि गंभीरता पूर्वक शोध परियोजना को पूर्ण करता है तो उसे चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम में शोध सहित डिग्री दी जाएगी। इसी तरह पीएचडी के लिए स्नातकोत्तर डिग्री या चार वर्षीय शोध के साथ डिग्री को अनिवार्य करने की बात भी की गई है। इस शिक्षा नीति के निर्माताओं के आगे एक चिंता या लक्ष्य और रहा है। वह लक्ष्य है -वैश्विक विकास एजेंडा और विश्व के परिपेक्ष्य में भारतीय शिक्षा व्यवस्था। 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ के वैश्विक विकास एजेंडा 2030 को भारत सहित विश्व के 193 सदस्य देशों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा की शिखर बैठक में अनुमोदित किया था। समुदाय ने 17 सतत विकास लक्ष्यों की ऐतिहासिक योजना शुरू की जिसका उद्देश्य वर्ष 2030 तक विश्व को और अधिक सपन्न, समतावादी और संरक्षित बनाना है। 2030 के लिए वैश्विक एजेंडा का मूल मंत्र सार्व भौमिकता का सिद्धांत है। 'कोई पीछे न छूटे'। इन उद्देश्यों पर अमल के लिए जरूरी है कि शिक्षा को और उसके लिए काम करने वालों को इसे प्रासंगिक बनाना ही पड़ेगा।

बदली दुनिया में ज्ञान का परिदृश्य भी बदला है। जिसके लिए हर क्षेत्र में अपनी तैयारी और पैठ बनाने की आवश्यकता है। तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अकुशल- कुशल क्षेत्रों में मशीनों तथा इंसानों के प्रयोग का संतुलन, गणित-कंप्यूटर विज्ञान और डेटा विज्ञान का संयुक्त कार्यबल बनाना, विज्ञानय सामाजिक विज्ञान और मानविकी की बहुआयामी क्षमताओं का प्रयोग, जलवायु परिवर्तनय ऊर्जा की बढ़ती-बदलती उपयोगिता य प्राकृतिक संसाधनों का उचित तथा बुद्धिमानी से प्रयोगय कृषि विज्ञान एवं जल प्रबन्धन का शिक्षा की विभिन्न शाखाओं में अनुप्रयोग, संक्रामक रोग महामारी प्रबंधन आदि कुछ प्रमुख शैक्षिक चुनौतियों को इसी सन्दर्भ में देखने और परिभाषित करने की आवश्यता है।

उच्च शिक्षा सिर्फ डिग्री प्राप्त करने का साधन नहीं होती बल्कि उसके माध्यम से ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार, निर्माण और प्रसार-प्रचार होता है। उच्च शिक्षा जब तक डिग्री और किताबों की सीमा से निकलकर नवाचारों और सृजन से नहीं जुड़ेगी तब तक वह सिर्फ तीन-चार साल एक डिग्री के पाठ्यक्रम में समय बर्बाद करने के अलावा कुछ नहीं होगी। शिक्षा का सीधा संबंध अर्थव्यवस्था के विकास के साथ सहकारी समुदायों को सामूहिक चिंतन की ओर ले जाना भी है. हमें शिक्षा को इस रूप में विकसित करना होगा की वह स्वयं के साथ-साथ देश को सामंजस्य पूर्ण और खुशहाल राष्ट्र के रूप में विकसित कर सके। इसके लिए शिक्षा को अपने मानक बदलने होंगे तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए इसे सहज पहुंच में लाना होगा। आदिवासी, पिछड़े, अल्प संख्यक, महिलाएं आदि वर्गों को विशेष ध्यान में रखकर अपनी नीति बनानी होगी।

सभी पिहोवा व प्रदेशवासियो को

नववर्ष

मकर संक्रांति व लोहड़ी

की हार्दिक शुभकामनाएँ

Happy New Year 2021

अक्षय नन्दा
मीडिया सह प्रभारी जिला भाजपा, कुरुक्षेत्र

2020 की मनहूसियत, अवसाद को छोड़ 21 में खिलखिलाएं!

डॉ अशोक शर्मा
प्रोफेसर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

दुनिया 2020 को मनहूस, हत्यारे, हानिकारक, अवसादी, भयानक, निराशावादी, अमंगल कारी, नौकरी, रोजगार, व्यापार को खाने वाले वर्ष के रूप में याद रखेगी। इस वर्ष में दुनिया में शायद हर व्यक्ति ने कुछ न कुछ जरूर खोया है। दुनिया भर में आतंक व खलबली का पर्याय रहे 2020 ने इंसान से चुन चुन कर बदला लिया है। सदियों बाद दुनिया के सभी बड़े छोटे, अमीर गरीब, विकसित व अविकसित सभी देशों को एक वायरस के आगे घुटने टेकते हुए हम देखा है। इंसान को एक दूसरे से दूर भागते व नाक सिकोंड़ते हुए हम सभी ने देखा है।

वर्ष 2020 को दुनिया इस बात के लिए भी याद रखेगी कि इस वर्ष ने हम सभी को इंसान व इंसानियत के बारे में सोचने का मौका भी दिया। चुनौतियों भरे माहौल में इंसान ने किस हौसले व मनोबल के साथ इस लड़ाई को लड़ा है। कैसे व्यक्ति के साथ साथ देश व दुनिया एक दूसरे की मदद करने के लिए आगे बढ़ी है। इसे भी हम सभी ने देखा है। इस वर्ष में अहंकार, घृणा, मन मुटाव की रेखाओं को लांघते हुए मॉस्क व सोशल डिस्टेंसिंग के साथ दिल की दूरियों को मिटते हमने देखा है। पहली बार लोगों को शहरों को छोड़कर गांव की और भागते देखा है।

मजदूरों पैदल चलते देखा है। घर, मौहल्ले, गांव व शहरों को कैद खाने में भी तब्दील होते देखा है। ऐसे हालात में भी लोगों को खुद को व दूसरों को उठाते हुए भी हम सभी ने देखा है। 2020 में सभी सपनों व उम्मीदों को हमने टूटते देखा है। जो लोगों के पास था उसे भी छीनते हुए देखा है। इसलिए जो गुजर गया, चला गया उस पर अब बात करने व रोने का अब क्या फायदा है। मोटिवेशनल स्पीकर रोबिन शर्मा कहते हैं कि हम पिछले वर्ष सीख सकते हैं कि दुनिया एक सप्ताह में बदल सकती है, जिस स्वयं को हम जानते हैं हम उससे कहीं अधिक मजबूत हैं। नायको को बड़े ऑफिस व पदों की आवश्यकता नहीं होती, शांत जीवन ही समृद्ध जीवन है, अच्छे मूड के लिए अच्छा संगीत जरूरी है, परिवार के लिए खाना पकाना किसी उत्सव से कम नहीं है, जब हम अच्छा करते हैं तो आलोचक भी तभी ज्यादा चिल्लाते हैं। अच्छी दैनिक दिनचर्या जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है, अपने बुर्जुगों के साथ समय बिताना सबसे बड़ा आनंद है,चुनौतियों में ही असीम संभावनाएं पैदा होती हैं, व्यक्ति को रचनात्मक बनाने में एकांत को अहम योगदान है।

आराम करना समय की बर्बादी नहीं, जीवन को उर्जा से भरता है। मुश्किल समय के बाद ही आनंदमयी समय बनता है। पिछले वर्ष की अन उत्पादकता समाप्त हो, हम सभी उपयोगी व उत्पादक बनें इसी दिशा में विचार करने की आवश्यकता है। हम एक व्यक्ति व समाज के रूप में आगे बढ़ें ऐसा सोच को सींचने की जरूरत है। हमे खुद भी हंसे हमारे आस पास दूसरे भी खिलखिलाएं कुछ ऐसे निर्णय लेने की आवश्यकता है। हमारे साथ दूसरे भी आगे बढ़ें ऐसी भावनाओं के साथ कदम बढ़ाने की अपेक्षा है।

पिछले वर्ष का जो कुछ पेंडिंग है उसे पुरा कर हम खुशियों व उत्पादकता के कारक बनें, हम आर्थिक, सामाजिक, व्यक्तिगत, अध्यात्मिक रूप से सबल बने ऐसी शपथ लेने की आवश्यकता है। आइए 2020 के अवसाद व तनाव को दिल से एक दूसरे की प्रशंसा व सम्मान कर मिटाएं।

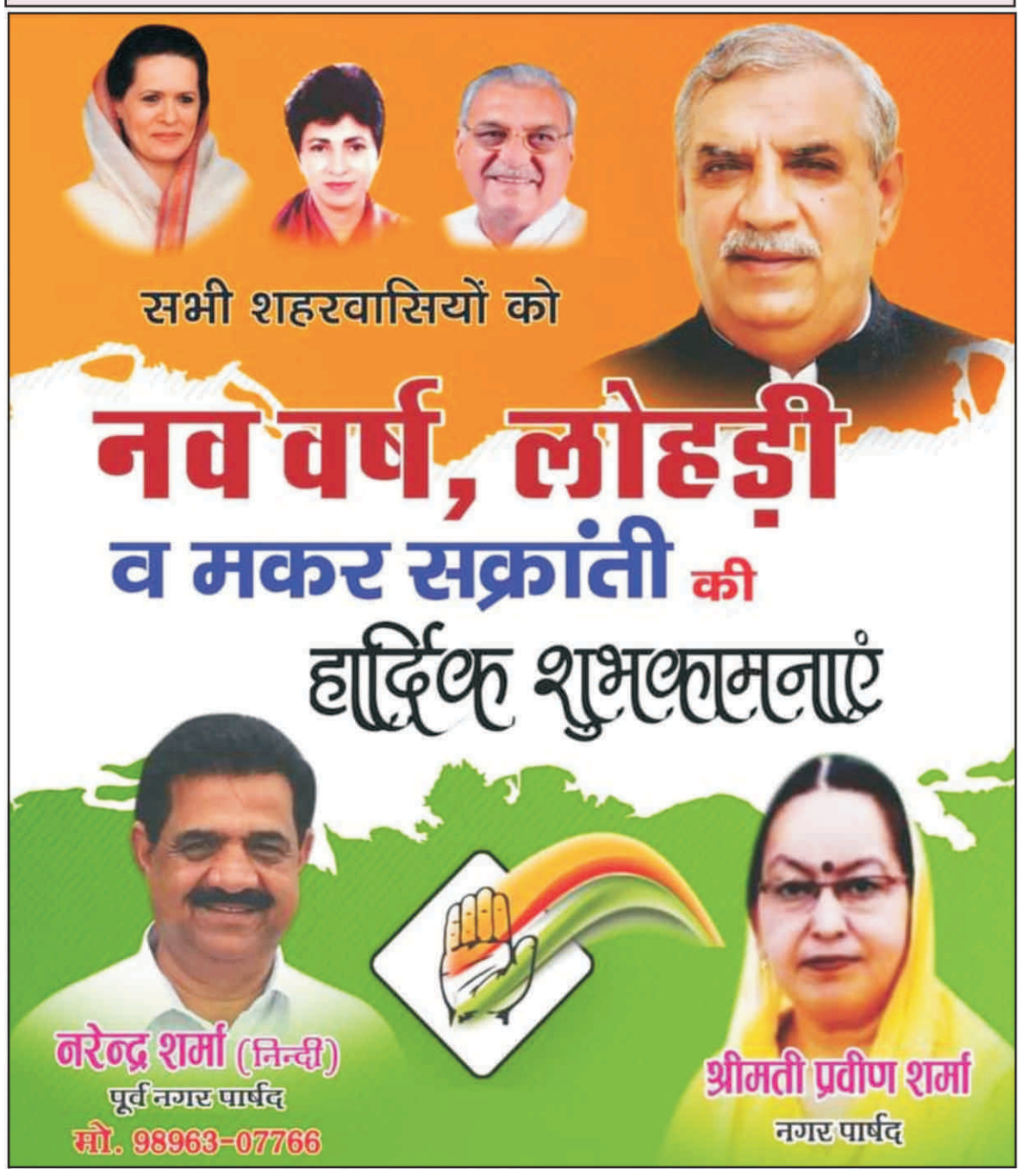

अधिकारों की आजादी के लिए महिलाएं दहलीज तो लांघे पर मर्यादा नहीं : डॉ. संतोष दहिया

सर्वखाप महिला महापंचायत का संगठन तेजी से बढ़ रहा है।

रणदीप रोड
कुरुक्षेत्र/बातों बातों में

सर्वखाप महिला महापंचायत की राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित डॉ. संतोष दहिया ने रोहतक जिले के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी डॉ निर्मला देवी एवं उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी कविता नरवाल एवं मिथलेश हुड्डा को सौंपी। डॉ. संतोष दहिया ने महिलाओं का आह्वान किया कि घर की चहारदीवारी से बाहर भी एक दुनिया है, जिसे नजदीक से देखने के लिए हमें दहलीज पार करनी होगी लेकिन यह भी ध्यान रहे कि इस आजादी के लिए हमें अपनी मर्यादा और परिवार की इज्जत का पल्लू कसकर पकड़े रखना है।

इस समन्वय के साथ आगे बढ़ेंगे तो आधी आबादी को अपना पूरा हक हासिल करने से कोई ताकत नहीं रोक सकती। कृषि बिल को देश विरोधी मानते हुए पिछले पंद्रह दिन से आंदोलनरत किसानों ने महापंचायत को भरोसा दिलाया कि जिस तरह महिलाओं ने चुल्हे-चौके के साथ-साथ धरने और अन्य संघर्षी गतिविधियों में भागीदारी सुनिश्चित की है, उससे सरकार पर दबाव और बढ़ेगा।

भारत की रीढ़ कहे जाने वाले किसान की जीत होगी तो इसमें महिलाओं के योगदान को भुलाया नहीं जाएगा ।डॉ. संतोष दहिया ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सडकों पर संघर्ष कर रहे हैं तो महिलाएं घर-परिवार और सडक के संघर्ष, दोनो की जिम्मेदारी मजबूती से निभा रही हैं। इससे पूर्व महिला अधिकारों पर विचार रखते हुए डॉ. संतोष दहिया ने कहा कि जब शासन-प्रशासन से समय की मांग के अनुरूप वाजिब हक न मिले तो उनकी प्राप्ति के लिए हमें एकजुट होकर आवाज बुलंद करनी होगी।

अपने अधिकारों के लिए हमें दूसरी ताकतों का मुंह ताकने की बजाय अपने बाजुओं में बल पैदा करना होगा।

महिला को अबला समझने की भूल करने वाले समाज में हमें साबित करना होगा कि यदि हमारे अधिकारों पर चोट की गई तो अबला से "बला" बनने से भी वह पीछे नहीं हटेंगी। डॉ. दहिया ने एक बात जोर देकर कही की कि समाज में कुछेक उदाहरण ऐसे भी सामने आए हैं जिसमें महिलाओं ने न्यायपालिका से मिली ताकत का गलत इस्तेमाल कर अमर्यादित कार्य किए हैं। ऐसी कुछेक महिलाओं के कारण समाज को हमारी पूरी जमात पर उंगली उठाने का मौका मिल जाता है। इसलिए सर्वखाप महिला महापंचायत के बैनर तले काम करने वाली सभी प्रतिनिधियों का यह भी दायित्व बनता है कि ऐसी महिलाओं की पहचान कर उन्हें रोकें और जागरूक कर मुख्यधारा में लाने का प्रयास करें। हम अपने अधिकारों की लड़ाई में शत-प्रतिशत सुखद नतीजे तभी हासिल कर सकते हैं जब अपनी एकता के साथ-साथ सामाजिक सभ्यता का भी ख्याल रखेंगे।

पौराणिक यात्रा - नाभ कमल तीर्थ

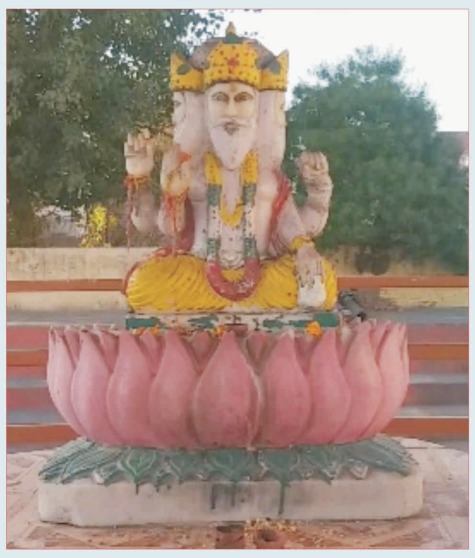

कुरुभूमि कुरुक्षेत को आप महाभारत रणभूमि ओर गीता उपदेश स्थली के रुप मे पहचानते है। लेकिन हम आपको पौराणिक यात्रा के सफर में कुरुक्षेत के उस पौराणिक तीर्थ पर लेकर चलते है । जिसे सृष्टि की उत्पति का आदि स्थान माना जाता है। कुरुक्षेत्र का नाभि कमल तीर्थ जहा महाप्रलय के बाद क्षीर सागर में शेष शैया पर भगवान विष्णु लेटे हुए थे। शेष शैया पर लेटे भगवान विष्णु की नाभि से एक कमल आविर्भाव हुआ। पौरणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमल पुष्प से ब्रह्मा का प्राकाट्य हुआ।

नाभि कमल तीर्थ, पुराणों के अनुसार वही स्थान है, जहां भगवान विष्णु के आदेश पर ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना यहां से प्रारंभ हुई। ऐसी मान्यता है कि इस तीर्थ की परिक्रमा करने से मनुष्य के सभी मनो कामना पूर्ण होती हैं।

नाभि कमल तीर्थ थानेसर नगर से पश्चिम में थानेसर बगथला मार्ग पर स्थित है। उस समय तप की आदेशात्मक भविष्य वाणी पर ब्रह्मा जी ने निकटस्थ स्थान, जोकि कालांतर में ब्रह्मासरोवर के नाम से विख्यात हुआ, पर घोर तप कर श्री विष्णु भगवान के दर्शन किए। भगवान विष्णु के आदेश पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना यही से प्रारंभ की। ऐसी पौराणिक मान्यता है

आठ कोसी परिक्रमा

चैत्र मास की कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को यहां से आठ कोसी परिक्रमा प्रारंभ होकर सरस्वती घाट, स्थानेश्वर मंदिर, कुबेर घाट, कन्या कुमारी, रतन दक्ष, आलमपुर, दयालपुरा, बाणगंगा, आपगा, नरकातारी और भीष्मकुंड से होती हुई यहीं पर संपन्न होती है।

पौरणिक तीर्थ की बनावट

तीर्थ में मुख्य मंदिर भगवान विष्णु का है, जिसमें विष्णु के नाभि कमल से ब्रह्मा की उत्पति दिखाती हुई प्रतिमा विराजमान है। नागर शैली में निर्मित मंदिर का शिखर शंक्वाकार है। दक्षिण दिशा में सरोवर है, जिसमें एक पक्का घाट है।

विश्व मे ब्रह्मा जी के दो मन्दिर है :

यह मात्र जनश्रुति नहीं है, बल्कि पुराणों में इस का स्पष्ट वर्णन मिलता है, पुरे विश्व में ब्रह्म जी के मात्र दो ही मंदिर है। कुरुक्षेत्र में जिसे ब्रह्मा की प्राकाट्य स्थली माना जाता

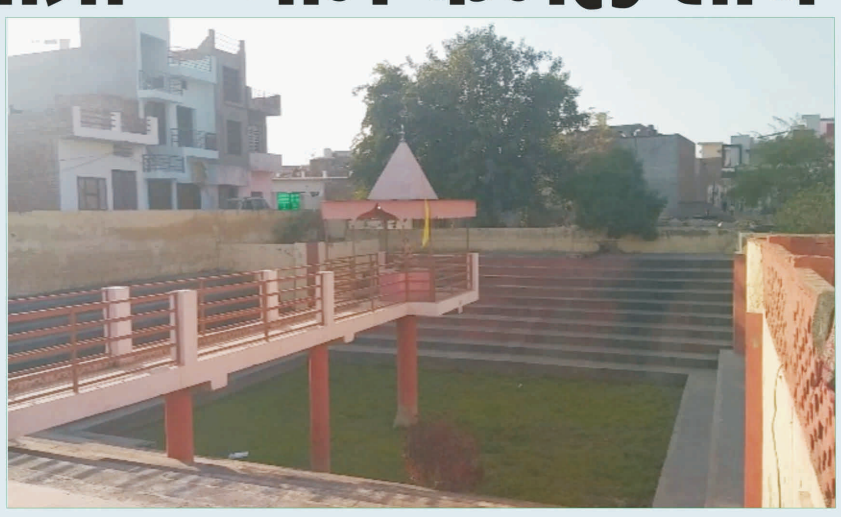

है। दूसरा पुष्कर राजस्थान में जिसे ब्रह्मा की तप स्थली के रूप में जाना जाता है। कुरुक्षेत्र महाभारत काल से पूर्व भी पवित्र तीर्थ के रूप में विख्यात था, कुरुक्षेत्र के बारे में ये वर्णनं मिलता है की सृष्टि के आदि स्थान के रूप में जाना जाता है।

महंत विशाल दास

श्री ठाकुर द्वारा प्राचीन तीर्थ श्री नाभ कमल महंत विशाल दास ने बताया कि तीर्थ का संचालन अखाड़े के पास है पूरे विश्व में नाभि कमल तीर्थ एक मात्र धर्मनगरी में स्थित है। बावजूद इसके प्रशासन के सहयोग की कमी बेहद खलती है। भगवान ब्रह्मा की उत्पति का यही स्थान माना जाता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा तीर्थों के विकास के लिए घोषणाएं तो की जाती हैं लेकिन धरातल पर कुछ भी नहीं दिखाई देता। उन्होंने कहा कि मंदिर की इतनी आमदनी नहीं है कि उसके दम पर कुछ किया जा सकते। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार से बड़ी उम्मीदें हैं। तीर्थों का विकास कर यहां के पर्यटन को बढ़ाया जा सकता है।

ग्राम सचिव की परीक्षा को शांतिपूर्ण व नकल रहित सम्पन्न करवाने के लिए जारी किए आदेश

ग्राम सचिव की परीक्षाओं को लेकर लगाई धारा 144, एसडीएम व डीआरओ को नियुक्त किया नोडल अधिकारी, परीक्षाओं को लेकर नियुक्त किए 17 डयूटी मैजिस्ट्रेट, 4 अधिकारियों को रखा रिजर्व

रणदीप रोड़
कुरुक्षेत्र/ बातों बातों में

परीक्षाओं को लेकर 17 डयूटी मैजिस्ट्रेट किए नियुक्त

जिलाधीश एवं उपायुक्त शरणदीप कौर बराड़ ने कहा कि हरियाणा कर्मचारी द्वारा विकास एवं पंचायत विभाग की ग्राम सचिव की परीक्षा का आयोजन 9 व 10 जनवरी 2021 को कुरुक्षेत्र जिले के विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में किया जाएगा। यह परीक्षा 9 व 10 जनवरी 2021 को सुबह 10 बजकर 30 मिनट से 12 बजे तक व सायं के सत्र में 3 बजे से लेकर 4 बजकर 30 मिनट तक आयोजित की जाएंगी। इन परीक्षाओं को सुचारु रुप से चलाने के लिए परीक्षा केन्द्रों की 200 मीटर की परीधि में धारा 144 लगाने के आदेश जारी किए है। इस दौरान शहर में भारी वाहनों के प्रवेश पर भी पूर्णतरू पाबंदी रहेगी।

जिलाधीश ने जारी आदेशों में कहा है कि परीक्षा के दौरान कानून व शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा परीक्षाओं का सुचारु रुप से संचालन करवाने के लिए सभी परीक्षा केन्द्रों के आसपास 200 मीटर की परीधि में धारा 144 लगाने के आदेश जारी किए है। यह आदेश 9 व 10 जनवरी 2021 को सांय 4 बजकर 30 मिनट तक जारी रहेंगे। इस समयावधि के दौरान किसी भी व्यक्ति को परीक्षा केन्द्र की 200 मीटर की परीधि में किसी भी प्रकार का हथियार, मोबाईल फोन, वाई–फाई यंत्र ले जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इतना ही नहीं परीक्षा केन्द्रों के आसपास फोटो स्टेट की मशीने भी बंद रखी जाएंगी।उन्होंने कहा कि परीक्षा के दौरान शहर में भारी वाहनों के प्रवेश पर भी पूर्णतरू पाबंदी रहेगी ताकि ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारु रुप से चलाया जा सके। इन आदेशों की अवहेलना करने पर आईपीसी की धारा 188 के तहत कार्रवाई भी अमल में लाई जाएगी। इन परीक्षाओं को सुचारु रुप से सम्पन्न करवाने के लिए शाहबाद के परीक्षा केन्द्रों के लिए एसडीएम शाहबाद, पिहोवा के परीक्षा केन्द्रों के लिए एसडीएम पिहोवा और थानेसर के परीक्षा केन्दों के लिए डीआरओ कुरुक्षेत्र को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

जिलाधीश एवं उपायुक्त शरणदीप कौर बराड ने दंड प्रकिया संहिता 1973 की धारा 22(1) व 23(2) के तहत 17 अधिकारियों को विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर 9 व 10 जनवरी के लिए डयूटी मैजिस्ट्रेट नियुक्त किया है, जिनमें एक्सईन काडा कुरुक्षेत्र, एसडीओ डीडीए कुरुक्षेत्र, हिरमी के उपनिदेशक, नायब तहसीलदार बाबैन, एक्सईन एचएसएएमबी कुरुक्षेत्र, डीडीए कुरुक्षेत्र, एक्सईन पीडब्लयूडी बीएंडआर–1 कुरुक्षेत्र, डीएचओ कुरुक्षेत्र, बीडीपीओ लाडवा, एईटीओ(एस) कुरुक्षेत्र, एक्सईन काडा कुरुक्षेत्र, लेबर अधिकारी कुरुक्षेत्र, बीडीपीओ शाहबाद, एसडीओ प्रदूषण अधिकारी कुरुक्षेत्र, तहसीलदार शाहबाद, माईनिंग अधिकारी कुरुक्षेत्र को डयूटी मैजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। इसके साथ–साथ 4 अधिकारियों को रिजर्व में रखा गया है, जिसमें नायब तहसीलदार थानेसर, एक्सईन हिरमी कुरुक्षेत्र, नायब तहसीलदार शाहबाद, तहसीलदार पिहोवा शामिल है।

कुरुक्षेत्र से एनडीए में सिलेक्ट हुए कैडेट जितीन सिंह और कैडेट राघव शेरावत का केनब्रिज एन डी ए विंग सेक्टर 17 में जोरदार स्वागत हुआ

रणदीप रोड
कुरुक्षेत्र/बातों बातों में

इस मौके पर जेनेसिस क्लासेस के मैनेजिंग डायरेक्टर जितेंद्र सिंह ने दोनों कैडेट्स को शुभकामनाएं दी और साथ ही उनकी सफलता पर उनके परिवार को बधाई दी और कहा कि हमारा मोटो "सर्वश्रेष्ठ शिक्षा सच्चे परिणाम" है केवल शिक्षा ही नहीं अपितु विद्यार्थी के अच्छे करियर का भी मकसद है। दोनो कैडेट एन डी ए की परीक्षा की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों से भी मिले और उनके साथ अपने अनुभव शेयर करते हुए कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र में पढ़ते समय जेनेसिस क्लासेस में एनडीए की तैयारी शुरू की थी और 2018–19 बैच में एनडीए में सेलेक्ट होने के बाद आज अपने अनुभवी टीचर्स का धन्यवाद करने आए हैं । जिनकी मेहनत और गाइडलाइन से आज हमे भारतीय सेना में ऑफिसर बनने का मौका मिला है ,सूबेदार रविंद्र कौशिक ने कहा कि 12वीं के बाद श्रेष्ठ विकल्प है एनडीए , 18 अप्रैल 2021 को होने वाली एनडीए की परीक्षा की तैयारी शुरू करवा दी है, भारतीय सेना में ऑफिसर बनने का सपना देख रहे युवाओं के लिए एक खास मौका है इससे आप सीधे भारतीय सेना में अधिकारी स्तर की नौकरी पा सकेंगे । एनडीए / एनए , प्रथम 2021 के लिए लघु अधिसूचना जारी कर दी गई है । इसके लिए आवेदन 30 दिसंबर से शुरू होंगे । एनडीए वर्तमान समय के सबसे बेहतरीन करियर विकल्पों में से एक है भारतीय सेना से जुड़ा गौरव और सम्मान पाने के लिए युवाओं को एनडीए अपनी और आकर्षित करता है ।

एक तरफ जहां छात्र ग्रेजुएशन के लिए मोटी फीस देते हैं तो वही पड। आदि में एनडीए कैडेट को प्रशिक्षण के दौरान ही वेतन, भत्ते व अन्य लाभ मिलने लगते हैं साथ ही 12वीं के बाद ही भारतीय सेना में अधिकारी बनने का मौका और इसके अलावा बहुत ही एडवेंचर और चुनौतियों से भरा जीवन और देश प्रेम के जज्बे के कारण वर्तमान समय में युवाओं की पहली पसंद बन गया है इसके लिए आवेदन 30 दिसंबर से 19 जनवरी 2021 तक किए जा सकेंगे , इसकी पूरी अधिसूचना 30 दिसंबर को ही जारी की जाएगी इसकी परीक्षा 18 अप्रैल 2021 को होनी तय हुई है एनडीए में सफलता के लिए एक्सपर्ट्स का मार्गदर्शन जरूरी है ,केनब्रिज कुरुक्षेत्र एनडीए की तैयारी के लिए सबसे उपयुक्त है इसमें अनुभवी फेकिलिटी द्वारा सभी विषयों की तैयारी कराई जाती हैं । एनडीए की लिखित परीक्षा में 2 पेपर होते हैं जिसमें पहला पेपर 300 अंक का गणित का होता है , और दूसरा पेपर 600 अंक का है जिसमें 200 अंक का अंग्रेजी विषय और 400 अंक का साइंस, ज्योग्राफी, हिस्ट्री, करंट अफेयर आदि विषय होते हैं इसमें 12वीं कक्षा में पढ़ने वाला छात्र अप्लाई कर सकता है और साइंस स्ट्रीम के छात्रों के लिए तीनों सेना में जाने का विकल्प है । कैप्टन गुरमेल सिंह ने कहा कि हमारे कुरुक्षेत्र के बच्चे एनडीए की तैयारी के लिए चंडीगढ़ और दिल्ली जाते थे अब अपने ही शहर में यह तैयारी कराई जा रही है इसका लाभ सभी बच्चों को मिलेगा और आने वाले समय में कुरुक्षेत्र से भी अनेकों अधिकारी भारतीय सेना में सेवारत होंगे । इस मौके पर जेनेसिस क्लासेस कुरुक्षेत्र डायरेक्टर रोबिन सिंह , पीयूष , प्रकाश जोशी , अमन सिंह व अन्य टीचर और विद्यार्थी मौजूद थे ।

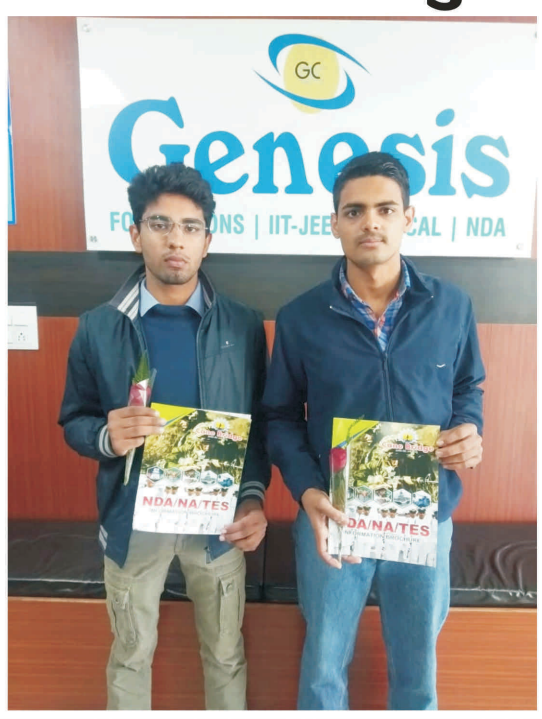

राष्ट्रीय युवा उत्सव के लिए 110 कलाकारों का किया चयन

रणदीप रोड़
कुरुक्षेत्र/ बातों बातों में

कुरुक्षेत्र। जिला खेल एवं युवा कार्यक्रम अधिकारी बलबीर सिंह ने बताया कि खेल एवं युवा कार्यक्रम विभाग हरियाणा द्वारा राज्य स्तर पर आयोजित किए गए आनलाईन सांस्कृतिक उत्सव मे विजेता कलाकारों का चयन कर लिया गया है। अब ये कलाकार 7 से 9 जनवरी 2021 तक स्थानीय कलाकृति भवन में राष्ट्रीय युवा उत्सव में प्रतिभागिता के लिए व्यक्तिगत प्रदर्शन करेंगे।

उन्होंने सोमवार को जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि इस सांस्कृतिक उत्सव के तहत 22 सांस्कृतिक विधाओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमें राष्ट्रीय युवा उत्सव में वर्चुअल आधार पर प्रतिभागिता करेंगी। इस वर्ष राष्ट्रीय युवा उत्सव का आयोजन कोविड–19 की हिदायतों के चलते जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर वर्चुअल आधार पर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय युवा उत्सव में प्रतिभागिता करने के लिए 110 कलाकारों का चयन किया गया है, जो अपनी सांस्कृति विद्याओं का प्रदर्शन करेंगे।

लोगो की पहली पसंद बातों बातों में

आवश्यक सूचना

पाठकों को सलाह दी जाती है की विज्ञापन पर किसी भी प्रतिक्रिया से पहले विज्ञापन में प्रकाशित किसी भी उत्पाद या सेवा के बारे में अपनी पूरी जाँच पड़ताल कर ले।यह समाचार पत्र उत्पाद या सेवा की गुणवत्ता या विज्ञापन दाता द्वारा दिए गए दावे या उल्लेख की पुष्टि या समर्थन नहीं करता।

समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे नौकरी सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। की कोई भी प्रतिक्रिया करने से पहले विज्ञापन के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ले तब कोई कदम उठाये। समाचार पत्र किसी भी विज्ञापन के बारे में किसी पाठक के प्रति उत्तरदायी नहीं होगा।

करोना कालखंड में अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2020 की झलकियाँ

भगवान श्रीकृष्ण की कर्मस्थली कुरुक्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने शंखनाद और मंत्रोच्चारण के बीच दीपदान किया। इस दीपदान के साथ ही परम्परा अनुसार अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव–2020 भी सम्पन्न हुआ। इस महाआरती की संध्या में दीपोत्सव मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा। इस दीपोत्सव में जहां ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर 2 लाख 25 हजार दीपक जलाएं वहीं कुरुक्षेत्र और 48 कोस के 134 तीर्थ स्थलों पर भी लाखों दीपक जलाए गए। इस समापन समारोह पर दीपोत्सव का यह दृश्य अदभुत और मनमोहक रहा।

श्री ब्रह्मण एवं तीर्थोद्वार सभा के मंदिरों पर भी जलाएं गए दिए

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2020 के पावन अवसर पर श्री ब्रह्मण एवं तीर्थोद्वार सभा द्वारा सन्निहित सरोवर व ब्रह्मसरोवर के तट पर स्थित वरदराज मंदिर, दुख भजन मंदिर, सूर्य नारायण मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर तथा कोलश्वर मंदिर व तीर्थ पर 108–108 दीपक जलाएं। इससे पूर्व सन्निहित सरोवर स्थित सूर्य नारायण मंदिर पर गीता यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें सभा के सरंक्षक, जय नारायण शर्मा, प्रधान पंडित पवन शास्त्री एवं प्रधान महासचिव रामपाल शर्मा के नेतृत्व में तीर्थ पुरोहितों ने आहुति डाली। यज्ञ के बाद गीता वितरण कार्यक्रम किया गया और 108 छोटी गीता श्रद्धालुओं में वितरित की।

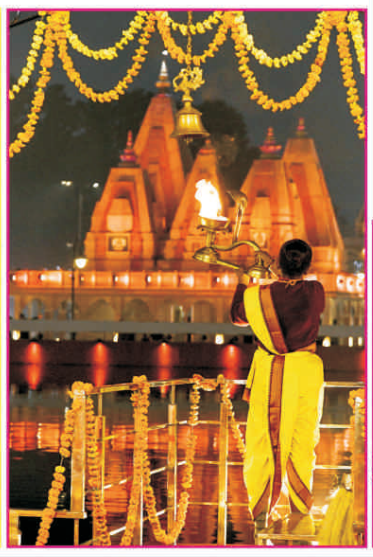

कोविड -19 के चलते आनलाईन देखा गया गीता महोत्सव

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव–2020 को अमेरिका के 5 लाख 18 हजार 635 लोगों ने आनलाईन प्रणाली से देखा। इस महोत्सव के साथ कनाड़ा के 62673 लोगों के साथ–साथ भारत सहित 25 देशों के कुल 18 लाख 92 हजार 100 लोग जुड़े रहे। इस महोत्सव की पल–पल की खबर व कार्यक्रमों को देखने के लिए लाखों लोग वेबसाईट, फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम और यूटयूब आदि सोशल मीडिया प्लेटफार्मस के माध्यम से जुड़े रहे है और महोत्सव के गीता पूजन, संत सम्मेलन, वैश्विक गीता पाठ, महाआरती, दीपोत्सव का घर बैठे ही लोगों ने आनंद लिया ।

उठो...जागो... और तब तक मत रूको! जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो!

Genesis CLASSES PVT. LTD.

Your Dreamz...Our Inspiration

"सर्वश्रेष्ठ शिक्षा, सच्चे परिणाम"

Mr. Jitendra Singh
MANAGING DIRECTOR
HOD CHEMISTRY
Exp. 14 Years

ON PARENTS & STUDENTS DEMAND
KARNAL TEAM
WHO HAS GIVEN BEST RESULT IN IIT-JEE/NEET
NOW IN KURUKSHETRA

Mr. Nauneet Kalhan
ACEDMIC DIRECTOR
HOD PHYSICS
Exp. 14 Years

Want to crack JEE/NEET/KVPY with Top Ranks
START EARLY AND STAY AHEAD
Join Shikhar Batch
For Class 10th to 11th Moving Students.
Batch Commencing from 11th January, 2021

ADMISSION OPEN
JEE-MAIN/ADVANCED | NEET
for Students Studying in Class 11th & Moving to Class 12th
PAY FEE FOR CLASS XII & REVISE CLASS XI FREE
Batch Commencing Date : 11th Jan., 2021

GENESIS SCHOLARSHIP CUM ADMISSION TEST
for CLASS IX, X, XI & XII | Exam Date : 10th Jan., 2021

SPARKLING PERFORMANCE IN NTSE 2019-20

GUPIL (STAGE-I) DPS
SHIVANG (STAGE-I) GURUKUL
HARSH (STAGE-I) GURUKUL
PARV (STAGE-I) GURUKUL

CRASH COURSE for JEE-MAIN/NEET
(Students Studying In Class XII & XII Passed)
Quick Revision of Syllabus & Test Series | Batch Starting from : 7th Jan., 2021

C.O. : SCF-58,59, Near Punjab National Bank, Sec-6, Main Market, Karnal | Ph. : 0184-2282220, 9215638407
Kurukshetra : SCO-96, Sector-17, Opposite Old Bus Stand, Behind Bikaner, Kurukshetra | 7678454813, 85108-08085 www.genesisclasses.in

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक पुष्पा रानी द्वारा ओजोन प्रिंटर्स, प्लाट नंबर 13, ज्योति नगर कुरुक्षेत्र 136 118 हरियाणा से छपवाकर बातों बातों में कार्यालय 902 ऐ गुरुदेव नगर के डी बी रोड कुरुक्षेत्र हरियाणा से प्रकाशित किया संपादकीय कार्यालय बातों बातों में 902 ऐ गुरुदेव नगर के डी बी रोड कुरुक्षेत्र हरियाणा 136118 मोबाइल नंबर 98120-08227 संपादक पुष्पा रानी